सांध्य दैनिक
4PM

आगे बढ़ने के लिए जीवन में उतार-चढ़ाव बहुत जरूरी हैं, क्योंकि ईसीजी में भी एक सीधी लाइन का मतलब होता है कि हम जिंदा नहीं हैं।
-रतन टाटा

मूल्य ₹ 3/-

जिद...सच की

www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_Sanjay YouTube @4pm NEWS NETWORK

• वर्षः 9 • अंकः 236 • पृष्ठः 8 • लखनऊ, मंगलवार, 3 अक्टूबर, 2023

दिल्ली पुलिस ने भड़ास मीडिया... 8 | यूपी से बाहर भी ताकत बढ़ाएगी... 3 | जातिगत जनगणना से खुलेगा तरक्की... 2

न्यूज क्लिक का मामला

अभिसार शर्मा, उर्मिलेश और भाषा सिंह समेत कई पत्रकारों के यहां छापे बताते हैं कि डर गयी है सरकार

» देश भर में पत्रकारों पर छापे डाले जाने की निंदा
» विपक्ष ने कहा-यह आपातकाल जैसे हालात

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। देश की मोदी सरकार को सच और सच बोलने वालों से काफी डर लगता है। यही वजह है कि देश में जो भी सच बोलता है या सत्ता से सवाल करने की हिम्मत जुटाता है, मोदी सरकार तुरंत सरकारी एजेंसियों का इस्तेमाल कर उस आवाज को दबाने का प्रयास करती है। यही कारण है कि भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में भी पिछले साढ़े 9 सालों में मीडिया अपना धर्म और कर्तव्य भूलकर सिर्फ सत्ता की चारण बनकर रह गई है। अधिकांश मीडिया चैनल सत्ता से सवाल करने की वजाय सिर्फ सत्ता का गुणगान करते हैं। लेकिन इस बीच कुछ स्वतंत्र पत्रकार और यूट्यूब चैनल ऐसे हैं जो सत्ता से सवाल करते रहते हैं। लेकिन मोदी सरकार को ये भी गंवारा नहीं, इसीलिए इन पत्रकारों की आवाज को दबाने का प्रयास किया जा रहा है।

आज ये सब हम इसलिए बता रहे हैं क्योंकि आज न्यूज क्लिक के कई ठिकानों पर दिल्ली पुलिस ने अचानक छापेमारी कर दी। दिल्ली पुलिस ने न्यूज क्लिक के दिल्ली, नोएडा, गाजियाबाद, गुरुग्राम और मुंबई में करीब 100 ठिकानों पर की है। दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल के करीब 500 पुलिसकर्मी रेड में शामिल हैं। इसके अलावा कुछ पत्रकारों को भी हिरासत में लिया गया है। साथ ही पत्रकार अभिसार शर्मा और न्यूज क्लिक के संस्थापक और प्रधान संपादक प्रबीर पुरकायस्थ को स्पेशल सेल के दफ्तर लाया गया है। इन पत्रकारों के फोन जब्त कर लिए गए हैं और उनसे लगातार पूछताछ जारी है। इतना ही नहीं इस मामले में दिल्ली पुलिस सीपीआईएम के महासचिव सीताराम येचुरी के घर भी पहुंची। जिसकी जानकारी खुद येचुरी ने दी। बताया जा रहा है कि न्यूज क्लिक के खिलाफ ये कार्रवाई 17 अगस्त को दर्ज यूएपीए के तहत की गई है। लेकिन छापेमारी की असल वजह क्या है ये हर किसी को पता है। क्योंकि भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में भी अब लोगों की आवाज स्वतंत्र नहीं रही है। यही वजह है कि इस मामले पर अब सियासत भी शुरू हो गई है। विपक्ष इस छापेमारी को लेकर मोदी सरकार पर हमलावर है। ऐसे में सवाल ये भी क्या मोदी शासन में ये देश के अंदर अघोषित आपातकाल तो नहीं है?

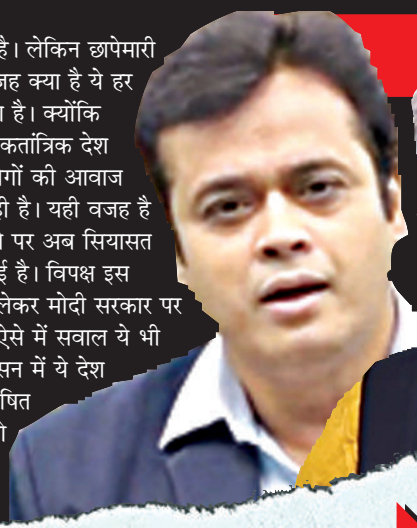

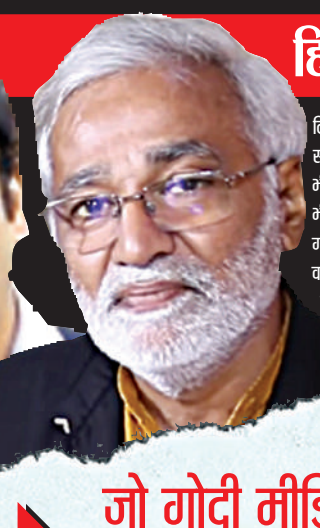

हिरासत में लिए गए ये पत्रकार

इस छापेमारी के दौरान पत्रकार उर्मिलेश और सत्यम तिवारी को हिरासत में लिया गया है। इसके अलावा पत्रकार अभिसार शर्मा और न्यूजक्लिक के संस्थापक व प्रधान संपादक प्रबीर पुरकायस्थ को स्पेशल सेल के दफ्तर लाया गया है। इसके अलावा तमाम पत्रकारों के फोन और लैपटॉप भी जब्त कर लिए हैं। स्पेशल सेल ने कुछ दस्तावेज भी जब्त किए हैं। इसके अलावा मुंबई में तीस्ता सीतलवाड़ के घर पर भी छापेमारी हुई है। हिरासत में लिए जाने से पहले अभिसार शर्मा ने ट्वीट किया कि दिल्ली पुलिस उनके घर पर पहुंच गई है और उनका लैपटॉप और मोबाइल जब्त कर लिया है। वहीं, एक और पत्रकार भाषा सिंह ने लिखा कि मेरे फोन से ये आखिरी ट्वीट। दिल्ली पुलिस ने मेरा फोन जब्त कर लिया है।

जो गोदी मीडिया नहीं बना उसे ऐसे ही डरा रही है सरकार

NEWS CLICK

एजेंसियां स्वतंत्र : ठाकुर

वहीं इस मामले पर केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने कहा कि अगर किसी ने गलत किया है तो उसकी जांच होनी चाहिए। एजेंसियां स्वतंत्र हैं और वह अपनी कार्रवाई कानूनी दायरे में ही काम करती हैं। अगर गलत तरीके से पैसा आया है तो कार्रवाई होगी। मुझे इन छापों पर सफाई देने की कोई जरूरत नहीं है।

कांग्रेस ने कहा-पीएम मोदी डरे हुए हैं

कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने इसे ध्यान भटकाने की साजिश बताते हुए कहा कि न्यूजक्लिक के पत्रकारों के घर सुबह-सुबह छापेमारी। बिहार में जातिगत जनगणना के आंकड़ों और पूरे देश में बढ़ती इसकी मांग से ध्यान भटकाने के लिए ये किया गया है। जब उनके सामने पाठ्यक्रम से बाहर का सवाल आता है तो वो एक ही काउंटर का सहारा लेते हैं,ध्यान भटकाने के। वहीं कांग्रेस पार्टी ने इस बारे में लिखते हुए प्रधानमंत्री मोदी को डरा हुआ बताया। कांग्रेस की ओर से कहा गया कि पीएम मोदी डरे हुए हैं, घबराए हुए हैं। खासतौर से उन लोगों से जो उनकी विफलताओं पर, उनकी नाकामियों पर उनसे सवाल पूछते हैं। वो विपक्ष के नेता हों या फिर पत्रकार, सच बोलने वालों को परेशान किया जाएगा।

छापे हारती भाजपा की निशानी : अखिलेश

समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष और उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने भी इस पर विरोध जताते हुए कहा कि छापे हारती हुई भाजपा की निशानी हैं। ये कोई नयी बात नहीं है। ईमानदार पत्रकारों पर भाजपाई हुक्मरानों ने हमेशा छापे डाले हैं। लेकिन सरकारी प्रचार-प्रसार के नाम पर कितने करोड़ हर महीने मित्र चैनलों को दिये जा रहे हैं ये भी तो कोई छापे।

जो भाजपा की भजन मंडली में शामिल नहीं होगा, उसके साथ ये ही होगा : झा

आरजेडी के राज्यसभा सांसद मनोज कुमार झा ने रेड को दुर्भाग्यपूर्ण बताते हुए कहा कि गांधी जयंती के ठीक बाद इससे ज्यादा दुर्भाग्यपूर्ण और दूर्भावनापूर्ण कार्रवाई नहीं हो सकती। आप उन्हें दिल्ली पुलिस क्यों कह रहे हैं? वे गृहमंत्री अमित शाह के अधीन हैं। उनकी मर्जी के बिना कुछ नहीं होता। जो आप से सवाल पूछे, आपकी भजन मंडली में शामिल न हो, वे उनके खिलाफ ऐसा ही करते हैं। वे ऐसा कर के क्या दिखाना चाहते हैं? ये सब इतिहास में दर्ज़ होगा। सरकार को इसकी कीमत चुकानी होगी।

मुट्ठी भर बचे स्वतंत्र मीडिया पर एजेंसियों का दुरुपयोग : महबूबा

पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी की अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती ने छापेमारी की निंदा करते हुए कहा कि यह छापेमारी बहुत व्यथित करने वाली है। उन्होंने आरोप लगाया कि भारत सरकार दावा करती है कि भारत लोकतंत्र की जननी है और यह विदेशों में प्रेस की स्वतंत्रता की बात करती है, लेकिन उसी पल वह मुट्ठी भर बचे स्वतंत्र मीडिया संस्थानों पर कार्रवाई करने के लिए सरकारी एजेंसियों का दुरुपयोग करती है।

जातिगत जनगणना से खुलेगा तरक्की का रास्ता

» सपा प्रमुख अखिलेश ने की नीतीश-तेजस्वी की प्रशंसा, मोदी सरकार से की पूरे देश में कराने की मांग

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। बिहार सरकार ने सोमवार को जातीय गणना की रिपोर्ट सार्वजनिक कर दी। अब जबसे बिहार सरकार ने जातीय जनगणना के आंकड़े सार्वजनिक किए हैं तबसे देश की राजनीति में एक नई बहस छिड़ गई है। क्योंकि जाहिर है कि जातीय जनगणना 2024 के लोकसभा चुनाव में भी खेला कर सकती है। यही वजह है कि इसको लेकर सभी राजनीतिक दलों की अपनी-अपनी प्रतिक्रियाएं सामने आ रही हैं। एक ओर जहां इंडिया गठबंधन पूरी तरह से जातीय जनगणना के समर्थन में खड़ा हो रहा है, तो वहीं भाजपा ने इस पूरे मसले पर अभी तक चुप्पी साध रखी है।

इस बीच उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव ने जातीय जनगणना के मुद्दे पर नीतीश-तेजस्वी सरकार की प्रशंसा करते हुए इसे सामाजिक न्याय का गणतीय आधार बताया और कहा कि जातिगत जनगणना देश की तरक्की का रास्ता है। सपा प्रमुख ने कहा कि जातिगत जनगणना 85-15 के संघर्ष का नहीं बल्कि सहयोग का नया रास्ता खोलेगी और जो लोग प्रभुत्वकामी नहीं हैं बल्कि सबके हक के हिमायती हैं, वो इसका समर्थन भी करते हैं और स्वागत भी। पूर्व सीएम अखिलेश यादव ने मोदी सरकार से देश भर में इस तरह की जनगणना कराने की अपील करते हुए कहा कि जो सच में अधिकार दिलवाना चाहते हैं वो जातिगत जनगणना करवाते हैं। भाजपा सरकार राजनीति छोड़े और देशव्यापी जातिगत जनगणना करवाए। उन्होंने इस पहल की तारीफ करते हुए कहा कि जब लोगों को ये मालूम पड़ता है कि वो गिनती में कितने हैं, तब उनके बीच एक आत्मविश्वास भी जागता है और सामाजिक नाइंसाफी के खिलाफ एक सामाजिक चेतना भी, जिससे उनकी एकता बढ़ती है और वो एकजुट होकर अपनी तरक्की के रास्ते में आनेवाली बाधाओं को भी दूर करते हैं, नये रास्ते बनाते हैं। बकौल अखिलेश, सत्ताओं और समाज के परम्परागत ताकतवर लोगों द्वारा किए जा रहे अन्याय का खात्मा भी करते हैं। इससे समाज बराबरी के मार्ग पर चलता है और समेकित रूप से देश का विकास होता है। जातिगत जनगणना देश की तरक्की का रास्ता है। यहां उन्होंने यह भी कहा कि अब ये निश्चित हो गया है कि पीडीए ही भविष्य की राजनीति की दिशा तय करेगा।

बिहार ने देश के सामने पेश की नजीर : तेजस्वी यादव

इधर, बिहार के डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव ने प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि है। उन्होंने जाति आधारित रिपोर्ट जारी होने के बाद कहा कि कम समय में जाति आधारित सर्वे के आंकड़े एकत्रित एवं उन्हें प्रकाशित कर बिहार आज फिर एक ऐतिहासिक क्षण का गवाह बना। दशकों के संघर्ष ने एक मील का पत्थर हासिल किया। इस सर्वेक्षण ने न सिर्फ वर्षों से लंबित जातिगत आंकड़े प्रदान किए हैं बल्कि उनकी सामाजिक आर्थिक स्थिति का भी ठोस संदर्भ दिया है। तेजस्वी यादव ने कहा कि अब सरकार त्वरित गति से वंचित वर्गों के समग्र विकास एवं हिस्सेदारी को इन आंकड़ों के आलोक में सुनिश्चित करेगी। इतिहास गवाह है भाजपा नेतृत्व ने विभिन्न माध्यमों से कितनी तरह इसमें रुकावट डालने की कोशिश की। बिहार ने देश के समक्ष एक नजीर पेश की है और एक लंबी लकीर खींच दी है। सामाजिक और आर्थिक न्याय की मंजिलों के लिए। आज बिहार में हुआ है कल पूरे देश में करवाने की आवाज उठेगी और वो कल बहुत दूर नहीं है। बिहार ने फिर देश को दिशा दिखाई है और आगे भी दिखाता रहेगी।

आर्थिक स्थिति का भी लगेगा पता : नीतीश कुमार

आंकड़े सार्वजनिक करने पर बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने प्रतिक्रिया देते हुए सोशल मीडिया पर लिखा कि बिहार में कराई गई जाति आधारित गणना के आंकड़े प्रकाशित कर दिए गए हैं। जाति आधारित गणना के कार्य में लगी हुई पूरी टीम को बहुत-बहुत बधाई। नीतीश ने कहा कि जाति आधारित गणना के लिए सर्वसम्मति से विधानमंडल में प्रस्ताव पारित किया गया था। बिहार विधानसभा के सभी 9 दलों की सहमति से निर्णय लिया गया था कि राज्य सरकार अपने संसाधनों से जाति आधारित गणना कराएगी और 2 जून 2022 को मंत्रिपरिषद से इसकी स्वीकृति दी गई थी। इसके आधार पर राज्य सरकार ने अपने संसाधनों से जाति आधारित गणना कराई है। जाति आधारित गणना से न सिर्फ जातियों के बारे में पता चला है बल्कि सभी की आर्थिक स्थिति की जानकारी भी मिली है। इसी के आधार पर सभी वर्गों के विकास एवं उत्थान के लिए अग्रेतर कार्रवाई की जाएगी।

जिसकी जितनी संख्या, उसकी हो उतनी हिस्सेदारी: लालू यादव

राष्ट्रीय जनता दल के सुप्रीमो और पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव ने भी जाति आधारित गणना के आंकड़े जारी होने पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि गांधी जयंती पर इस ऐतिहासिक क्षण के हम सब साथी बने हैं। भाजपा की अनेकों साजिशों, कानूनी अड़चनों और तमाम षड्यंत्र के बावजूद आज बिहार सरकार ने जाति आधारित सर्वे को रिलीज किया। यह आंकड़े वंचितों, उपेक्षितों और गरीबों के समुचित विकास और तरक्की के लिए समग्र योजना बनाने एवं हाशिए के समूहों को आबादी के अनुपात में प्रतिनिधित्व देने में देश के लिए नजीर पेश करेंगे। सरकार को अब सुनिश्चित करना चाहिए कि जिसकी जितनी संख्या, उसकी उतनी हिस्सेदारी हो। हमारा शुरू से मानना रहा है कि राज्य के संसाधनों पर न्यायसंगत अधिकार सभी वर्गों का है। केंद्र में 2024 में जब हमारी सरकार बनेगी तब पूरे देश में जातिगत जनगणना करवायेंगे और दलित, मुस्लिम, पिछड़ा और अति पिछड़ा विरोधी भाजपा को सत्ता से बेदखल करेंगे।

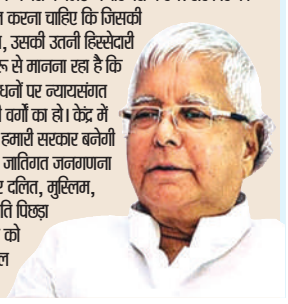

मायावती ने केंद्र और यूपी सरकार से की जातीय जनगणना कराने की मांग

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। बसपा प्रमुख मायावती ने बिहार सरकार द्वारा जातीय जनगणना के आंकड़े सार्वजनिक किए जाने के बाद अब केंद्र व यूपी सरकार से भी जातीय जनगणना कराने की मांग कर डाली है। दरअसल, बिहार सरकार द्वारा कराए गए जातीय जनगणना के आंकड़े सार्वजनिक होने की खबरें सुर्खियों में हैं। कुछ पार्टियां इससे असहज जरूर हैं किन्तु बसपा के लिए ओबीसी के संवैधानिक हक के लम्बे संघर्ष की यह पहली सीढ़ी है।

बसपा प्रमुख ने कहा कि बीएसपी को प्रसन्नता है कि देश की राजनीति उपेक्षित 'बहुजन समाज' के पक्ष में इस कारण नई करवट ले रही है। जिसका नतीजा है कि एससी-एसटी आरक्षण को निष्क्रिय व निष्प्रभावी बनाने तथा घोर ओबीसी व मण्डल विरोधी जातिवादी एवं सांप्रदायिक दल भी

अपने भविष्य के प्रति चिंतित नजर आने लगे हैं तो यूपी सरकार को अब अपनी नीयत व नीति में जन भावना व जन अपेक्षा के अनुसार सुधार करके जातीय जनगणना एवं सर्वे अविलम्ब शुरू करा देना चाहिए। इसका सही समाधान तभी होगा जब केन्द्र सरकार राष्ट्रीय स्तर पर जातीय जनगणना कराकर उन्हें उनका वाजिब हक देना सुनिश्चित करेगी।

सपा-भाजपा के 200 नेता हमारे संपर्क में: अजय

» लोस चुनाव से पहले यूपी में बढ़ी कांग्रेस की अहमियत

» सपा समेत कई दलों के नेता थाम रहे कांग्रेस का दामन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। लोकसभा चुनाव के करीब आते ही हर राजनीतिक दल अपनी-अपनी रणनीति बनाने में जुट गई है। यही वजह है कि अब यूपी में सभी दलों ने अपनी-अपनी योजनाएं बनानी शुरू कर दी हैं। इस बीच यूपी में कांग्रेस की पूछ भी बढ़ गई है। पिछले कुछ दिनों में यूपी कांग्रेस में कई अन्य दलों के नेता भी आए हैं और लगातार आ रहे हैं। दरअसल, कांग्रेस के बढ़ते महत्व का एक प्रमुख वजह ये भी है कि विपक्ष के इंडिया गठबंधन में कांग्रेस की भूमिका काफी अहम है। इसीलिए यूपी के क्षेत्रीय दलों के असंतुष्ट नेता कांग्रेस का रुख कर रहे हैं।

असंतुष्ट नेताओं का मानना है कि कांग्रेस

एक मजबूत विकल्प है। इसी वजह से अब कई दलों के नेता पार्टी के साछ आ रहे हैं। इसी क्रम में सोमवार को लखनऊ स्थित कांग्रेस कार्यालय में समाजवादी पार्टी समेत कई अन्य दलों के नेताओं ने कांग्रेस का दामन थामा। कांग्रेस के यूपीसीसी चीफ अजय राय ने तो यहां तक दावा कर दिया कि सपा और बीजेपी के 200 से ज्यादा नेता हमारे संपर्क में हैं। लोकसभा चुनाव के पहले कांग्रेस की कोशिश है कि वह राज्य में सभी वर्गों में अपनी पकड़ मजबूत करे। कांग्रेस की निगाह यूपी के उन नेताओं पर है जिन्हें अपने दल में सम्मान नहीं मिल रहा है। बीते दिनों अजय राय ने सपा के संस्थापक सदस्यों में से एक सीपी राय को कांग्रेस का प्रवक्ता बनाया था। इसके जरिए कांग्रेस ने यह संदेश देने की कोशिश की कि अन्य दलों से आए हुए नेताओं को भी पूरा सम्मान दिया जाएगा। इसके अलावा कांग्रेस, बीजेपी की काट निकालने की कोशिश में भी लगी है। पार्टी ने दलित बस्तियों में सहभोज और संपर्क अभियान भी शुरू कर दिया है।

इन नेताओं ने थामा कांग्रेस का 'हाथ'

सोमवार को जिन नेताओं ने कांग्रेस का दामन थामा उसमें पुष्पांकर देव, शिव कुमार पाठक , शमसुलहीन, सपा नेता रामजी अवस्थी बब्लू वर्मा, शोभित मिश्रा, फिरोज अली, जितेन्द्र पाल ,गौरव मिश्रा, अनुराग मिश्रा, आलोक शर्मा, पवन , जगदीश नारायण,जागेश्वर यादव, गुड़िया गौतम ,जाकिर, मेंहदी ,हाफिज मोहम्मद उस्मान समेत कई नेता पार्टी में शामिल हुए।

महाराष्ट्र और पूरा देश जानता है एनसीपी का संस्थापक कौन : शरद पवार

» सुप्रिया सुले ने भी कहा- कहीं नहीं जाएगी एनसीपी

» 6 अक्टूबर को चुनाव आयोग करेगा मामले में सुनवाई

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। महाराष्ट्र में एनसीपी के नाम और सिंबल को लेकर चाचा-भतीजे यानी कि शरद पवार और अजित पवार के बीच मची रार और लड़ा अब चुनाव आयोग के पाले में है। जहां 6 अक्टूबर को चुनाव आयोग सुनवाई करेगा। लेकिन उससे पहले दोनों ही दल अपने-अपने दावे कर रहे हैं। इस बीच एनसीपी शरद पवार गुट की वरिष्ठ नेता और लोकसभा सांसद सुप्रिया सुले ने एनसीपी के नाम व चुनाव चिह्न को लेकर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि बच्चा-बच्चा जानता है कि एनसीपी का संस्थापक और मुखिया कौन है।

पार्टी सिंबल और नाम पर बात करते हुए सुप्रिया सुले ने कहा कि शरद पवार के पार्टी और चुनाव चिह्न खोने का कोई सवाल ही नहीं है। एनसीपी सांसद ने जोर देकर कहा कि यह स्पष्ट है कि पार्टी अपने संस्थापक के साथ रहेगी। सुले ने कहा कि मेरा मानना है कि पार्टी का नाम और चुनाव चिह्न जाने का कोई सवाल ही नहीं है। सुले ने साफ शब्दों में कहा कि पार्टी की स्थापना शरद पवार ने की थी और यह उन्हीं के पास रहना चाहिए, यह स्पष्ट है। वहीं इस पूरे मामले पर शरद पवार ने भी अपनी टिप्पणी की। शरद पवार ने पार्टी सिंबल और नाम पर बोलते हुए कहा कि आम आदमी क्या सोचता है यह महत्वपूर्ण है। कुछ लोगों ने एक अलग राजनीतिक रुख अपनाया है और मैं इस पर टिप्पणी नहीं करना चाहता क्योंकि लोकतंत्र में यह उनका अधिकार है। लेकिन, महाराष्ट्र और देश के बाकी लोग जानते हैं कि कौन एनसीपी का संस्थापक है। मेरे लोग जो कहते हैं उसमें सच्चाई है। स्थिति हमारे अनुकूल है। इस दौरान पवार ने ये भी कहा कि जिन लोगों ने बीजेपी से हाथ मिलाया है, वे एनसीपी के नहीं हो सकते। इस बीच अजित पवार ने कहा कि वह चुनाव आयोग के अंतिम फैसले को स्वीकार करेंगे।

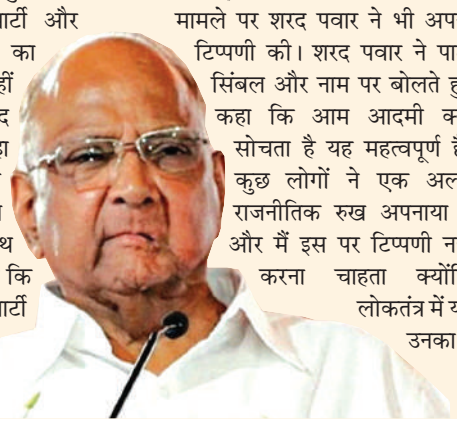

बढ़ सकती हैं अजित गुट की मुश्किलें

फिलहाल ये साफ है कि शरद पवार और अजित पवार के नेतृत्व में राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के दोनों गुट इस सप्ताह के अंत में चुनाव आयोग के सामने पेश होने वाले हैं। चुनाव आयोग 6 अक्टूबर को इस पूरे मामले पर सुनवाई करेगा। अजित पवार की शिवसेना के विभाजन को लेकर अजित पवार के बयानों के आधार पर शरद पवार का गुट चुनाव आयोग में अपना पक्ष रख सकता है। इससे अजित गुट की मुश्किलें बढ़ने संभावना है।

यूपी से बाहर भी ताकत बढ़ाएगी सपा

मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान में जनाधार बढ़ाने में जुटे अखिलेश

» सपा प्रमुख की कोशिश राष्ट्रीय दल बने समाजवादी पार्टी

» कांग्रेस से कई जगहों पर मिलकर लड़ने की कवायद

» मध्य प्रदेश में 25-30 सीटों पर यादव मतदाता निर्णायक

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान में अपने जनाधार को बढ़ाने की जुगत में लगी है। साल के आखिर में इन तीन राज्यों में विधान सभा चुनाव होने हैं। सपा मुखिया अखिलेश यादव अपनी पार्टी को राष्ट्रीय स्तर पर पहुंचाने के प्रयास में लगे हैं। हालांकि वह कितने कामयाब होंगे ये तो चुनावों के नतीजे के बाद पता चलेंगे। यूपी में भाजपा के नाक में दम करने करने के बाद वह देश अन्य राज्यों में भी अपनी साख बनाने में लगे हैं। चूकि समाजवादी पार्टी का उत्तर प्रदेश में अच्छा जनाधार है इसलिए व इंडिया गठबंधन का हिस्सा होने की वजह से यहां पर ज्यादा सीटें लेना चाहती है जबकि कांग्रेस को सीमित सीटों पर ही समेटना चाहती है जबकि अन्य राज्यों में सपा कांग्रेस के साथ गठबंधन करके इंडिया को मजबूती देना चाहती है। सपा की इस कवायद से भाजपा की परेशानी बढ़ रही है।

सपा ने भाजपा के सपने को चकनाचूर करते हुए घोसी की सीट जीती ही नहीं बल्कि बरकरार रखी। सबसे बड़ी बात उस उपचुनाव में उसे सारे जातियों व वर्गों के वोट मिले । उसके इस अपार जनसमर्थन से भाजपा बौखला गई है। इसलिये तो भाजपा के नीचे से लेकर शीर्ष तक के नेता सपा को ही नहीं पूर्व सीएम अखिलेश यादव को घेरने का कोई मौका नही छोड़ते हैं। वहीं चर्चा है कि मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव में सपा और कांग्रेस के बीच गठबंधन की प्रबल संभावना है। दोनों पार्टियों के शीर्ष नेतृत्व के बीच बात चल रही है। आधिकारिक घोषणा होने के बाद दोनों पार्टियों के प्रमुख नेता मंच भी साझा करेंगे। वर्तमान में लोकसभा में सपा सीटों की संख्या 3 जबकि राज्यसभा में 13 है। पार्टी के यूपी में 55 विधान परिषद में 111 में विधानसभा के सदस्य हैं। जबकि महाराष्ट्र में दो व मध्य प्रदेश विधानसभा में एक सीट है।

मध्य प्रदेश में 25-30 सीटों पर यादव मतदाता निर्णायक माने जाते हैं। हालांकि, करीब 50 सीटों पर इनकी ठीक-ठाक संख्या है। वहां मुस्लिमों का रुझान कांग्रेस के प्रति है, पर यादव मतदाताओं पर भाजपा की अच्छी पकड़ मानी जाती है। मध्य प्रदेश के मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस ने पूरी ताकत के साथ चुनाव मैदान में उतरने की रणनीति बनाई है। इसके तहत वोट प्लस करने वाले अन्य दलों को साथ लाने की उसकी योजना है। यूं तो मध्य प्रदेश में सपा का कोई बड़ा जनाधार नहीं है, लेकिन यादव बहुल कई सीटों पर उसका पहले से ही अच्छा दखल रहा है। साल 2003 के विधानसभा चुनाव में सपा सात सीटें जीत भी चुकी है। पिछले विधानसभा चुनाव में सपा ने बिजावर सीट जीती थी, जबकि पांच सीटों पर दूसरे नंबर पर रही थी। सूत्रों के मुताबिक, इन छह सीटों के अलावा चार अन्य सीटें सपा गठबंधन के तहत मांग रही है। सपा के रणनीतिकारों का मानना है कि 2018 के चुनाव में सपा के बेहतर प्रदर्शन वाली सीटों को देने में कांग्रेस को कोई दिक्कत भी नहीं होनी चाहिए, क्योंकि पिछले चुनाव में इन सीटों पर मुख्य मुकाबला सपा व भाजपा के बीच रहा था। कांग्रेस आमने-सामने की लड़ाई में नहीं थी। राज्य में सपा व कांग्रेस गठबंधन के पैरोकारों का कहना है कि दोनों पार्टियों के साथ आने पर अखिलेश यादव समेत सभी प्रमुख नेता साझा मंच से प्रचार करेंगे तो यादव मतदाताओं को साथ लाने में मदद मिलेगी। इससे अंतत: कांग्रेस को ही फायदा होगा। दूसरी ओर सपा राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा पाने की ओर बढ़ेगी। विपक्षी गठबंधन इंडिया की समन्वय समिति में सपा की ओर से सदस्य व राज्यसभा सांसद जावेद अली खान स्वीकार करते हैं कि मध्य प्रदेश के विधानसभा चुनाव में साझेदारी के लिए सपा और कांग्रेस के बीच बात चल रही है। अगर बातचीत नतीजे पर पहुंचती है तो यह दोनों दलों के लिए फायदेमंद होगा। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव 27 व 28 सितंबर को मध्य प्रदेश के दौरे पर रहे थे। उन्होंने वहां जातीय जनगणना के कांग्रेस के समर्थन को सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ना बताया था। साथ ही यह भी कहा था कि जिसे कांग्रेस टिकट न दे, उसे सपा चुनाव लड़ा सकती है। राजनीतिक हलकों में इसे दबाव की राजनीति माना जा रहा है, ताकि कुछ खास हिस्सों में अपनी पकड़ दिखाते हुए यह भी अहसास करा दिया जाए कि गठबंधन पर बात न बनने पर मध्य प्रदेश में सपा किस हद तक जा सकती है। इसी रणनीति के तहत सपा छह सीटों पर अपने उम्मीदवार घोषित कर चुकी है।

भाजपा के दिग्गज नेता को सपा से जोड़ने की कवायद

अब बात वर्तमान की करें तो घासीराम पटेल राजनगर विधानसभा सीट से भाजपा के प्रबल दावेदार थे, लेकिन पार्टी ने 2018 की चुनाव में कांग्रेस को कड़ी टक्कर देने वाले पूर्व प्रत्याशी व वर्तमान भाजपा जिला महामंत्री अरविंद पटेरिया को फिर से अपना प्रत्याशी बनाया है। इसके बाद हलाकि कोई भी विरोध प्रदर्शन घासीराम पटेल एवं उनके समर्थकों के द्वारा नजर नहीं आया, लेकिन बीते रोज जब सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष और यूपी के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव खजुराहो आए तो घासीराम पटेल उनसे मिलने जरूर गए और मुलाकात की तस्वीर अब सोशल मीडिया में जमकर वायरल हो रही है। जिसे देखकर यही अंदाजा लगाया जा सकता है कि आने वाले समय में घासीराम पटेल फिर से बगावती तेवर अपना सकते हैं। तस्वीर बहुत कुछ बयां कर रही है, लेकिन अभी स्पष्ट तौर पर कुछ नहीं कहा जा सकता।

कई नेता अखिलेश से संपर्क में

समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष और उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव के छतरपुर जिले के खजुराहो आगमन पर छतरपुर की राजनीति में भूचाल आ गया। दरअसल भाजपा और कांग्रेस के कुछ नेता अखिलेश यादव से मिलने पहुंचे, जहां अब कयास लगाए जा रहे हैं कि वे अपनी ही पार्टी से टिकट न मिलने पर बगावत कर सकते हैं। मुलाकात की तस्वीर भी वायरल हो रही है। बता दें कि राजनगर विधानसभा से कांग्रेस के प्रबल दावेदार शंकर प्रताप सिंह मुन्ना राजा अखिलेश यादव के खजुराहो पहुंचने पर उनसे मिलने पहुंचे। तो वहीं छतरपुर विधानसभा से कांग्रेस के प्रबल दावेदार डीलमणि सिंह बब्बू राजा ने भी खजुराहो पहुंचकर अखिलेश से मुलाकात की। जिनकी तस्वीरें सोशल मीडिया पर वायरल हो रही हैं। इससे कयास लगाए जा रहे हैं कि टिकट न मिलने की स्थिति में यह समाजवादी पार्टी का दामन थाम कर कांग्रेस से बगावत कर सकते हैं। कांग्रेस के शंकर प्रताप सिंह मुन्ना राजा और डीलमणि सिंह बब्बू राजा पूर्व में भी कांग्रेस से बगावत कर बहुजन समाज पार्टी और फिर भाजपा में भी जा चुके हैं और फिर वहां से वापस कांग्रेस में लौटे थे। यहां अब फिर इन्होंने सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव से मिलकर पार्टी छो?ने और दल बदलने के कयास पैदा कर दिए हैं। बता दें कि इन दोनों पर दल बदलने का तमगा पहले भी लग चुका है। इसी तरह भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष घासीराम पटेल जो कि राजनगर विधानसभा से भाजपा के प्रबल दावेदार थे। जहां अब उन्हें टिकट नहीं मिली और पार्टी ने यहां से अरविंद पटेरिया का नाम घोषित कर दिया है। ऐसे में माना जा रहा है कि वे भी बगावत करेंगे। यूं तो छतरपुर जिले के राजनगर विधानसभा क्षेत्र के वरिष्ठ भाजपा नेता घासीराम पटेल जो पूर्व में भाजपा के जिला अध्यक्ष एवं मंडी अध्यक्ष रह चुके हैं, उनकी गिनती सरल स्वभाव के नेताओं में होती है। लेकिन अपने निजी हित के चलते पार्टी के साथ दगाबाजी करने का आरोप भी उनके सर लगता रहा है। पूर्व में जब राजनगर विधानसभा सीट का परिसीमन नहीं हुआ था। तब छतरपुर विधानसभा से टिकट की दावेदारी कर रहे घासीराम पटेल को जब टिकट नहीं मिली थी तो वे बगावत कर निर्दलीय चुनाव मैदान में उतरे थे और बुरी तरह से चुनाव हारे थे। इसके बाद एक बार फिर उन्होंने भाजपा का दामन थामा था और भाजपा के सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में कार्य किया। पार्टी ने उनकी शिद्दत को देखते हुए उन्हें भाजपा जिला अध्यक्ष के पद से भी नवाजा था। हालांकि वर्ष 2013 के चुनाव में जब राजनगर विधानसभा सीट से पार्टी ने रामकृष्ण कुसमारिया को प्रत्याशी बनाया था और उन्हें हार का सामना करना पड़ा था, तब रामकृष्ण कुसमारिया ने साफ तौर पर अपनी हार के लिए जिम्मेदार भाजपाइयों में घासीराम पटेल का भी नाम गिनाया था। यानी कि पार्टी के साथ भितरघात कर पार्टी उम्मीदवार को हराने के आरोप साफ तौर पर 2013 में भी घासीराम पर लगे थे।

राजे के बिना भाजपा का नहीं हो सकेगा राजस्थान!

» कार्यकर्ताओं के आगे झुका शीर्ष नेतृत्व

» वसुंधरा के तेवर से घबराए शाह-नड्डा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जयपुर। राजे समर्थक नेता देवी सिंह भाटी के भाजपा में वापसी से यह तो तय हो गया कि बीजेपी का पूर्व सीएम को नजरअंदाज करना लगभग मुश्किल है। शीर्ष नेतृत्व के दौरे से पहले पूव सीएम वसुंधरा राजे के हजारों समर्थक उनके घर पर एकत्र हो गए थे। शायद वे कार्यकर्ता ये चाहते है कि महारानी राजस्थान में सीएम के रुप में मैदान में उतरे। कार्यकर्ताओं की भावना को ध्यान में रखते हुए भाजपा के शीर्ष नेतृत्व ने वसुंधरा राजे से मुलाकात की उसके बाद शरीर के हावभाव से ऐस लगा कि वसुंधरा राजे अब अपनी भूमिका से संतुष्ट हैं। दरअसल, जयपुर राजस्थान विधानसभा चुनाव से पहले भाजपा की प्रदेश इकाई में एक बार फिर से वसुंधरा राजे के समर्थकों की वापसी से पूर्व मुख्यमंत्री को मजबूती मिली है।

मतलब निकलता है कि राजे अभी भी मुख्यमंत्री की दौड़ में चल रही हैं। राजस्थान भाजपा इकाई में पिछले 6 महीनों से राजे की भूमिका को लेकर सवाल चल रहे हैं। राजे को लेकर सबसे बड़ा सवाल यही है जो आम जनता से लेकर भाजपा कार्यकर्ताओं के अंदर चल रहा है। निरंतर हुई सभाओं में केंद्रीय नेतृत्व ने कई बार स्पष्ट किया है कि आगामी चुनाव में भाजपा का चेहरा सिर्फ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी होंगे और पहचान कमल का फूल। हाल ही में 25 सितंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जयपुर में एक बड़ी सभा में भी साफ किया था कि हमारी शान, पहचान कमल का फूल है। फिर भी राजे समर्थक मैडम के लिए किसी बड़ी घोषणा के इंतजार में बेठे हुए हैं। हालांकि सभा के अगले ही दिन वसुंधरा राजे के जयपुर स्थित 13 सिविल लाइंस स्थित बंगले पर भारी संख्या में समर्थकों की भीड़ जमा हुई थी। राजे के समर्थकों के एकदम से एकत्र होने से भाजपा में हलचल तो बड़ी थी, परंतु किसी भी विवाद या विरोध की खबर नहीं निकली। अगले ही दिन राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा और केंदीय ग्रहण मंत्री अमित शाह जयपुर पहुंचे और देर रात तक बैठकों का दौर चला। देर रात जब वसुंधरा राजे बैठक कर बाहर आईं तो उनके चेहरे पर मुस्कान थी, वो पॉजिटिव नजर आ रहीं थीं।

भाटी की वापसी से अंदरूनी विरोध थमा

अमित शाह और नड्डा के जाते ही देर शाम भाजपा के बागी नेता देवी सिंह भाटी की वापसी भाजपा में हुई। भाटी राजे गुट के नेता माने जाते हैं, और अर्जुन मेघवाल के विरोधी कहे जाते हैं। भाटी की वापसी को लेकर भाजपा में अंदरूनी विरोध था, जो एकाएक थम गया और खुद प्रदेशाध्यक्ष जोशी ने उनका स्वागत किया। राजे समर्थक इसको मैडम की बड़ी जीत के रूप में देख रहे हैं। भाजपा आलाकमान बिना किसी चेहरे के चुनाव में जाने का मन बना चुका है, जिसको खुद प्रधानमंत्री ने सार्वजानिक मंच से स्वीकार किया है। चुनाव के बाद मुख्यमंत्री की दौड़ में राजे अभी भी शामिल हैं कि नहीं, ये देखना अभी बाकी है।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

जिद... सच की

खालिस्तानियों की फिर शर्मनाक हरकत

भारत विरोधी खालिस्तानियों ने फिर एक नापाक काम किया है। अबकि बार स्कालैंड के एक गुरुद्वारे में भारत के उच्चायुक्त को जाने से रोका गया है। इस तरह की हरकत के बाद भारत ने ब्रिटेन की सरकार को तुरंत आपत्ति दर्ज करा दी है। कनाडा से चल रहेविवाद के बाद खालिस्तानियों द्वारा ऐसी हरकत करना अक्षम्य है। पश्चिमी देशों को ध्यान देना चाहिए भारत एक संप्रभु देश है और उसके राजनयिक के साथ दुर्व्यवहार उस देश के साथ संबंधों को खराब करने वाला हो सकता है। भारत का विदेश मंत्रालय इस तरह की हरकतों के बाद तुरंत सक्रिय हो जाता है ऐसी उम्मीद की जा सकती है कि अब आगे ऐसी हरकते नहीं होंगी। कनाडा और भारत तनाव के बीच स्कॉटलैंड के ग्लासगो में एक गुरुद्वारे में यूनाइटेड किंगडम में भारतीय उच्चायुक्त विक्रम दोरईस्वामी को प्रवेश करने से रोक दिया। सिख यूथ यूके के इंस्टाग्राम चैनल पर एक वीडियो पोस्ट की गई है जिसमें कथित तौर पर खालिस्तान समर्थक एक व्यक्ति को अल्बर्ट ड्राइव पर ग्लासगो गुरुद्वारे में प्रवेश करने से दोरईस्वामी को रोकते हुए देखा जा सकता है।

दरअसल, यूनाइटेड किंगडम में भारतीय उच्चायुक्त विक्रम दोरईस्वामी को 29 सितंबर को ग्लासगो में एक गुरुद्वारे में प्रवेश करने से रोक दिया गया। सूत्रों के मुताबिक, ब्रिटेन में भारतीय उच्चायुक्त विक्रम दोरईस्वामी ने बहस में पड़ने के बजाय वहां से चले जाने का फैसला किया। इस मुद्दे को ब्रिटेन के विदेश कार्यालय और पुलिस के समक्ष भी उठाया गया है। सिख यूथ यूके के इंस्टाग्राम चैनल पर एक वीडियो पोस्ट की गई है, जिसमें कथित तौर पर खालिस्तान समर्थक एक व्यक्ति को अल्बर्ट ड्राइव पर ग्लासगो गुरुद्वारे में प्रवेश करने से दोरईस्वामी को रोकते हुए देखा जा सकता है। फिलहाल, घटना पर लंदन में भारतीय उच्चायोग और विदेश मंत्रालय (एमईए) की औपचारिक प्रतिक्रिया नहीं आई है। वीडियो में साफ सुना जा सकता है कि एक व्यक्ति कह रहा है कि कनाडा और अन्य स्थानों में सिखों को नुकसान पहुंचा रहे हैं, प्रत्येक सिख को किसी भी भारतीय राजदूत के खिलाफ विरोध करना चाहिए जैसा कि हमने यहां ग्लासगो में आज किया। सिख यूथ यूके का दावा है कि भारतीय अधिकारियों के आधिकारिक तौर पर गुरुद्वारे में जाने पर प्रतिबंध लगा हुआ है। वीडियो के मुताबिक, पार्किंग में उच्चायुक्ते की कार के पास दो लोग खड़े हुए है और उनमें से एक को कार का दरवाजा खोलने की कोशिश कर रहा है। कथित वीडियो में उच्चायुक्त की कार को गुरुद्वारा परिसर से निकलते देखा गया। इस मामले को गंभीरता से लेते हुए भारत ने ब्रिटेन के सामने इस मुद्दे को बड़ी कड़ाई के साथ रख दिया है।

पश्चिमी देशों को ध्यान देना चाहिए भारत एक संप्रभु देश है और उसके राजनयिक के साथ दुर्व्यवहार उस देश के साथ संबंधों को खराब करने वाला हो सकता है। भारत का विदेश मंत्रालय इस तरह की हरकतों के बाद तुरंत सक्रिय हो जाता है ऐसी उम्मीद की जा सकती है कि अब आगे ऐसी हरकते नहीं होंगी। कनाडा और भारत तनाव के बीच स्कॉटलैंड के ग्लासगो में एक गुरुद्वारे में यूनाइटेड किंगडम में भारतीय उच्चायुक्त विक्र म दोरईस्वामी को प्रवेश करने से रोक दिया।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

सिर्फ विशेष सत्र समाप्त हुआ है, विशेष एजेंडा कायम है!

श्रवण गर्ग

इस रहस्य से कभी पर्दा नहीं उठ पाएगा कि देश और दुनिया भर में सनसनी फैलाते हुए पांच दिन के लिए संसद का विशेष सत्र क्यों तो बुलाया गया और फिर उसे चार दिन में ही क्यों समेट दिया गया ! पांचवे दिन का क्या हुआ? आशंकाएं तो यही थीं कि पूरा सत्र इतनी गर्माहट से भर जाएगा कि उसे आगे बढ़ाना पड़ेगा। वैसा कुछ भी नहीं हुआ। अंत में जो नजर आया वह यही था कि आक्रामक विपक्ष और जनता का मूड भांपते हुए सरकार ने अपने अघोषित एजेंडे पर रणनीतिक रूप से पीछे हटने का तय कर लिया। ऐसा मान लेने में कोई हर्ज नहीं कि संसद की पुरानी इमारत से नये भवन में प्रवेश मात्र से प्रधानमंत्री न तो ज्यादा लोकतांत्रिक हो गए और न ही पवित्र सेंगोल की उपस्थिति में उनका कोई हृदय परिवर्तन हो गया है।

संसद का एक और विशेष सत्र बुलाने के निर्णय से पहले प्रधानमंत्री शायद पांच राज्यों के चुनाव परिणामों से रूबरू होना चाहते हैं। इसीलिए विधानसभा चुनाव लोकसभा जैसी तैयारियों से लड़े जा रहे हैं। इनके परिणाम ही अब लोकसभा चुनावों की तारीखें भी तय करेंगे? याद किया जा सकता है कि बहु-चर्चित विशेष सत्र की जानकारी संसदीय मंत्री प्रह्लाद जोशी द्वारा 31 अगस्त को ट्वीटर के जरिए देश को उस समय दी गई थी जब विपक्षी गठबंधन इंडिया के नेता अपनी महत्वपूर्ण बैठक के लिए मुंबई में जमा थे। याद करने की दूसरी चीज यह है कि विशेष सत्र की शुरुआत के समय पुराने संसद भवन की लोकसभा में प्रवेश से ठीक पहले प्रधानमंत्री ने मीडिया की उपस्थिति में तीन-चार मिनिटों में क्या कहा था! प्रधानमंत्री ने कहा था, विशेष सत्र ऐतिहासिक होगा। समय के हिसाब से छोटा है पर ऐतिहासिक निर्णयों का सत्र होगा। पचहत्तर साल की यात्रा नए मुकाम से हो रही है। 2047 तक देश को एक विकसित राष्ट्र बनाकर रहना है। रोने-धोने के लिए बहुत समय होता है, करते रहिए। भारत की विकास यात्रा में अब कोई विघ्न नहीं रहेगा। सवाल यह है कि क्या विशेष सत्र ठीक वैसा ही साबित हुआ जैसा कि दावा किया गया था? ऐतिहासिक निर्णयों के नाम पर जो हासिल हुआ क्या उसी के लिए इतनी अटकलों और अफवाहों को जन्म दिया गया? इतनी सनसनी फैलने दी गई! कथित तौर पर अंग्रेजों की गुलामी के प्रतीक पुराने संसद भवन से प्रधानमंत्री के सपनों के नये भारत को दर्शाने वाले नए भवन तक पैदल यात्रा किस ताकत के प्रदर्शन के लिए की गई

थी? कहीं ऐसा तो नहीं कि कुख्यात 'नोटबंदी' और त्रासदायी 'लॉक डाउन' जैसा ही कुछ चौंकाने वाला होना था पर सरकार की हिम्मत आखिरी क्षणों में जवाब दे गई? प्रधानमंत्री ने अपनी वैश्विक महत्वाकांक्षाओं को इतना ऊंचा उठा दिया है कि वे अब उस जगह वापस नहीं लौट सकते जहां से उन्होंने सत्ता-प्राप्ति की यात्रा प्रारंभ की थी। प्रधानमंत्री इस सचाई से बेखबर नहीं होंगे कि पार्टी में उनकी जरूरत तभी तक कायम है जब तक वे उनके 'व्यक्तिवाद' का समर्थन करने वाले सांसदों-विधायकों को सत्ता में स्थापित करते रहने का सामर्थ्य दिखाते रहते हैं! अपने साथ पार्टी संगठन को भी उन्होंने सत्ताभिमुख कर दिया है। प्रधानमंत्री पिछले चार दशक से अधिक समय से सत्ता की राजनीति से जुड़े हुए हैं। अत: इस तरह की मान्यताएं निर्विवाद हैं कि इतने लंबे कालखंड में विपक्ष दलों से कहीं ज्यादा शत्रु उन्होंने अपनी ही पार्टी, संघ और उसके आनुषंगिक संगठनों में खड़े कर लिए हैं। ये सब भी विपक्षी पार्टियों की तरह ही उस क्षण की वापसी की प्रतीक्षा में हैं जिसे प्रधानमंत्री कभी लौटता हुआ नहीं देखना चाहेंगे। संसद का विशेष सत्र उसी क्षण को पीछे धकेलने की कोशिशों का एक असफल प्रयास माना जा सकता है! विश्वासपूर्वक कहा जा सकता है कि अभी केवल संसद का विशेष सत्र ही खत्म हुआ है, प्रधानमंत्री का विशेष एजेंडा नहीं ! एजेंडा पूरी तरह से कायम है और उसकी कार्यसूची की जानकारी भी सिर्फ प्रधानमंत्री को ही होगी। संभव है एजेंडे को लागू करने के लिए प्रधानमंत्री राहुल गांधी और विपक्षी गठबंधन इंडिया के किसी कमजोर क्षण अथवा उसकी किन्हीं कमजोर कड़ियों के टूटकर बिखरने की प्रतीक्षा कर रहे हों। उन्हें निश्चित ही यकीन होगा कि शरद पवार, नीतीश कुमार, अखिलेश यादव और अरविंद केजरीवाल के कांग्रेस के साथ अविश्वास के संबंध और 2024 के परिणामों को लेकर विपक्षी दलों में व्याप्त भय की स्थिति भाजपा की मददगार साबित हो सकती है। विपक्षी दलों के बीच अपनी आवाज को और मजबूत करने के लिए कांग्रेस के लिए जरूरी हो गया है कि दो महीने बाद होने जा रहे विधानसभा चुनावों में वह कर्नाटक जैसी ही जीत हासिल करके दिखाए। यही कारण है कि कांग्रेस को कमजोर करने के लिए तीनों राज्यों (मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़) में प्रधानमंत्री ने पार्टी की पूरी ताकत को झोंक दिया है। यह बात अलग है कि इन राज्यों में कांग्रेस से मुकाबले के साथ-साथ पार्टी की अंदरूनी कलह से भी उन्हें निपटना पड़ रहा है।

भूख के संकट से बचाने वाला महानायक

देविंदर शर्मा

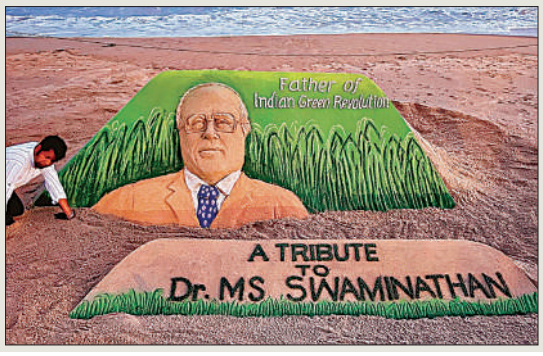

उन्हें भारत में हरित क्रांति का पितामह कहा जाता है, प्रोफेसर एमएस स्वामीनाथन, बेहतरीन विज्ञानी एवं प्रशासक, जीते जी किंवदंती बने, जिन्हें संयुक्त राष्ट्र के तत्कालीन महासचिव कुर्त वाल्डहाइम ने पत्र लिखकर बधाई देते हुए विश्व का पहला खाद्य पुरस्कार विजेता घोषित किया। उनके देहावसान से एक युग का अंत हुआ है। उन्होंने एक बार मुझे बताया- 'हरित क्रांति के इतिहास की शुरुआत दरअसल इंदिरा गांधी के साथ कार-यात्रा में आधे घंटे की बातचीत से शुरू हुई।' यह पूछने पर कि इस भावी कृषि क्रांति को संबल देने लिए जिस राजनीतिक इच्छाशक्ति की जरूरत थी, वह पाना कितना मुश्किल रहा। इस पर प्रो. स्वामीनाथन ने यादों के पिटारे से बताया कि उस वक्त मैं नयी दिल्ली में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान में निदेशक था और पूसा परिसर में एक नये भवन का उद्घाटन करने इंदिरा गांधी आईं, मैं उनके साथ था, रास्ते में प्रधानमंत्री ने पूछा 'स्वामी, मैं आपके द्वारा बताए नए किस्म के गेहूं पर दांव खेलने को तैयार हूं, लेकिन क्या आप मुझे यह वचन दे सकते हैं कि आज से दो सालों के बाद हमारे पास जरूरत के गेहूं के अलावा 1 करोड़ टन अतिरिक्त अन्न होगा, क्योंकि मैं पीठ पर सवार दुष्ट अमेरिकियों को उतार फेंकना चाहती हूं।'

स्वामीनाथन ने वचन दिया और जो कर दिखाया, इतिहास है। वह देश, जो जिंदा रहने के लिए दो जून की रोटी जुटाने लायक नहीं था और करोड़ों लोगों का पेट भरने के लिए समुद्री जहाजों में लदकर खाद्यान्न आते थे, वहां कृषि-क्रांति से हुए परिवर्तन ने न केवल आत्म-निर्भरता बनाई बल्कि एक निर्यातक भी बना दिया। राजनीतिक नेतृत्व के यथेष्ट समर्थन से हुई हरित क्रांति की गाथा का प्राथमिक उद्देश्य देश को भुखमरी के चंगुल से निकलना था। बंगाल में 1943 के महा-अकाल के महज चार साल बाद मिली आजादी के बाद भी भुखमरी की चुनौती से निजात नहीं मिल पाई। दशकों तक, पीएल-480 योजना के तहत खाद्यान्न उत्तर अमेरिका से आता रहा।

मालूम हो कि विश्व के अनेकानेक प्रभावशाली लोगों ने भारत को नकारा मान लिया था, कुछेक ने तो यहां तक भविष्यवाणी कर डाली कि 1970 के दशक के मध्य तक, बाकियों का पेट भरने के लिए आधे भारतीयों के जीवन को समाप्त करना पड़ सकता है। भुखमरी से लड़ाई की प्रो. स्वामीनाथन की नियति, विश्व के इतिहास में, सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक घटनाओं में एक के रूप में दर्ज होगी। न केवल इसने देश के भीतर करोड़ों लोगों की जिंदगी बदल दी बल्कि शेष दुनिया के लिए भी प्रेरणा बनी। हरित क्रांति के पुरोधा प्रो. स्वामीनाथन को भी सघन कृषि के नकारात्मक परिणामों का बखूबी भान था। वे हर मायने में दूरदृष्टा थे और कई बार उन्होंने न दिखाई पड़ने वाली भावी विफलता की चेतावनियां दीं। वर्ष 1968 में, हरित क्रांति शुरू होने के एक साल बाद, उन्होंने लिखा 'मिट्टी की प्रजनन शक्ति और संरचना को बचाए बगैर भूमि पर सघन खेती करते जाने का हश्र मरुस्थल बनाना है। कीट-फफूंद-खरपतवार नाशकों के अंधाधुंध उपयोग से इनका विषैला अंश अन्न और अन्य खाद्य पदार्थों में समा जाएगा और इससे कैंसर जैसे रोग बढ़ेंगे। भूजल के गैर-वैज्ञानिक दोहन से इस नैसर्गिक पूंजी में तेजी से ह्रास होगा।'

फिलीपींस स्थित अंतर्राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान में निदेशक रहते हुए उन्हें इंडोनेशिया के राष्ट्रपति सुहार्तो से असामान्य संकट-संदेश मिला, जब भूरे टिड्डों की वजह से देश की धान फसल को बहुत नुकसान हुआ। सुहार्तो ने प्रो. स्वामीनाथन को इसका निदान निकालने को कहा। उन्होंने और तीव्र कीटनाशक इस्तेमाल करने की बजाय वैज्ञानिकों की टीम इंडोनेशिया भेजी जिसने सुहार्तो को कीटनाशकों पर प्रतिबंध लगाने की सलाह दी। ठीक इसी वक्त एकीकृत कीट-प्रबंधन अभियान चलाया। सुहार्तो ने अध्यादेश जारी कर 57 कीटनाशकों को प्रतिबंधित कर दिया। बहुत से लोगों को मालूम नहीं होगा कि प्रो. स्वामीनाथन तकनीक के अंध-विश्वासी नहीं थे। यहां तक कि जिन दिनों आनुवंशिक रूप से संशोधित धान (जेनेटिकली मॉडिफाइड राइस) के खिलाफ अभियान सबसे तीखा था, तत्कालीन पर्यावरण मंत्री जयराम रमेश को दिया उनका मशविरा बीटी बैंगन के व्यावसायिक उत्पादन की अनुमति रोककर रखने के पीछे मुख्य कारक था। चेन्नई स्थित एमएस स्वामीनाथन रिसर्च फाउंडेशन में आयोजित प्रेस-वार्ता में उन्होंने फली की एक फोटो दिखाई और जीएम राइस के औचित्य पर सवाल उठाया। यहां उनका कहने का मतलब था कि रिवायती तौर पर चावल पकाते वक्त जो फलियों की पत्तियां डाली जाती हैं उससे विटामिन-ए खुद-ब-खुद प्राप्त हो जाता है।

यदि केवल समय-समय पर प्रो. स्वामीनाथन द्वारा उठाई चिंताओं पर नीति निर्माता ध्यान देते रहते तो भारतीय कृषि अपनी सततता बनाए रखने पर बने घोर संकटों में न फंसती। उन्होंने सेंट्रल एडवाइजरी बोर्ड ऑन प्लांट रिसोर्स ऑफ सीजीआईएआर (जो कि अंतर्राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान केंद्रों का एक समूह है) की अध्यक्षता भी की है। मैं उस वक्त सीजीआईएआर के बौद्धिक संपदा अधिकार हेतु केंद्रीय परामर्श प्रकोष्ठ का सदस्य था। वैश्विक स्तर पर उपलब्ध पौध आनुवंशिक स्रोत सीधे निजी कंपनियों को देने पर लगी रोक में निभाई उनकी महत्ती भूमिका गोपनीय बनी रही। मैं चश्मदीद गवाह हूं कि वैश्विक जैव-विविधता खजाने का निजीकरण करने वाले प्रयासों को विफल करने में उन्हें कितने बड़े स्तर पर प्रयास करने पड़े थे।

महिलाओं में कैंसर

इन फलों से कम होगा जोखिम

कैंसर, गंभीर और जानलेवा स्थिति मानी जाती है, सभी उम्र वाले लोगों में इसका खतरा हो सकता है। महिलाओं में सर्वाइकल और स्तन कैंसर के मामले सबसे अधिक रिपोर्ट किए जाते रहे हैं, जिसके कारण हर साल लाखों की मौत हो जाती है। आनुवांशिकता के साथ लाइफस्टाइल और आहार की गड़बड़ी ने इसके खतरे को काफी बढ़ा दिया है। कैंसर के खतरे से बचाव के लिए जरूरी है कि दिनचर्या और आहार को ठीक रखें। एंटी-कैंसर वाले आहार आपके जोखिमों को कम करने में लाभकारी हो सकते हैं। शोधकर्ताओं ने पाया कि कुछ फलों में ऐसे तत्व पाए जाते हैं, जो कैंसर के जोखिमों को कम करने वाले हो सकते हैं। पपीते को लेकर किए गए शोध में पाया गया कि यह महिलाओं की सेहत में सुधार और कुछ प्रकार के कैंसर से बचाने वाला फल हो सकता है।

पपीता

शोधकर्ताओं ने पाया कि पपीता लाइकोपीन से भरपूर होता है, यह एक प्रकार का एंटीऑक्सीडेंट है जिसे सर्वाइकल और स्तन कैंसर के खतरे से बचाने वाला माना जाता है। पपीता के अलावा गाजर, टमाटर और तरबूज में भी इसकी मात्रा होती है। हृदय रोग से बचाने और कोलेस्ट्रॉल-रक्तचाप को कम करने में भी इस फल के सेवन से लाभ पाया जा सकता है। सभी महिलाओं को आहार में पपीता को शामिल करना चाहिए।

तरबूज

तरबूज के बीज शरीर को बीमारियों से बचाने और इनसे लड़ने में मदद करने वाले इम्यून सिस्टम को बढ़ाने में भी लाभदायक हो सकते हैं। दरअसल, यूरोपियन जर्नल ऑफ क्लिनिकल न्यूट्रिशन के मुताबिक मैग्नीशियम और इम्यून सिस्टम के बीच गहरा संबंध है।

सेब के प्रभावी गुण

सेब न केवल सबसे लोकप्रिय फलों में से एक है। सेब के प्रत्येक सर्विंग से फाइबर, पोटेशियम और विटामिन-सी प्राप्त होता है, ये सभी कैंसर से बचाने में आपके लिए मददगार हो सकते हैं। सेब में पाया जाने वाला फाइबर शौच की नियमितता को बढ़ावा देता है और आपके पाचन तंत्र को ठीक रखने में मदद करता है। पोटेशियम आपके द्रव संतुलन को ठीक करता है और कैंसर के जोखिमों को कम करने में इसके लाभ हो सकते हैं। सेब को सबसे पौष्टिक फलों में से एक माना जा सकता है। यह इम्युनिटी को बढ़ा सकता है, तनाव झेलने में मदद कर सकता है, और इसमें बायोएक्टिव कंपाउंड भी होते हैं जो मानव स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद होते हैं। सेब में पेक्टिन नामक घुलनशील डाइटरी फाइबर भरपूर मात्रा में होते हैं, जो पाचन प्रक्रिया में सहायक हो सकते हैं।

अंगूर के एंटीऑक्सीडेंट प्रभाव

कैंसर के खतरे को कम करने के लिए आप फायदेमंद फलों की सूची में अंगूर को भी शामिल कर सकते हैं, ये फल एंटीऑक्सीडेंट, विटामिन्स और खनिजों से भरपूर होता है। अंगूर में मौजूद विटामिन सी, प्रोविटामिन-ए और पोटेशियम की मात्रा शरीर को कई गंभीर रोगों के खतरे से बचाने वाली भी हो सकती है। इसके अलावा लाइकोपीन एक कैरोटीनॉयड है जिसमें शक्तिशाली कैंसर रोधी गुण होते हैं। कुछ शोध बताते हैं कि यह कैंसर उपचार वाले रोगियों के लिए विशेष लाभकारी है।

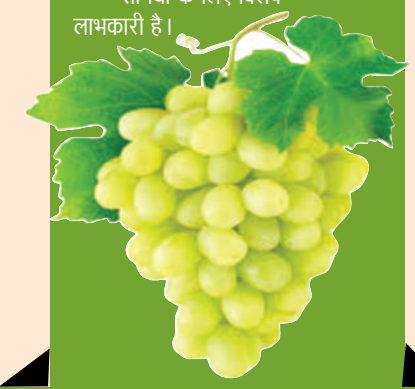

संतरे से होने वाले लाभ

संतरे साइट्रिक फल होने के कारण विटामिन-सी से भरपूर होते हैं, जो शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के लिए काफी लाभकारी है। विटामिन-सी के साथ ये थायमिन, फोलेट और पोटेशियम जैसे अन्य महत्वपूर्ण पोषक तत्वों की पूर्ति करने वाला फल है। विटामिन-सी को प्रतिरक्षा के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है जो कैंसर से बचाने और उपचार के दौरान भी आपको तेज रिकवरी पाने में मदद कर सकता है।

हंसना मना है

डॉक्टर के पास पहुंचा गप्पू, डॉक्टर ने गप्पू की टेस्ट रिपोर्ट देख कहा- आपकी एक किडनी फेल हो गई है, गप्पू रोने लगा, और कुछ देर बाद आंसू पोंछते हुए बोला-ये तो बता दीजिए डॉक्टर साहब कि मेरी किडनी आखिर कितने नंबर से फेल हुई है?

डाकू (संता से) - हम घर लूटने आए हैं, लेकिन बंदूक घर पर ही भूल गए हैं संता- कोई बात नहीं, आप लोग शरीफ आदमी लगते हो, आज घर लूट लो कल आकर बंदूक जरूर दिखा जाना।

लड़की वाले बेटी के लिए लड़का देखने गए। लड़की वाले- कितना कमा लेते हो? लड़का- इस महीने दो करोड़ कमाया। लड़की वाले- फिर क्या हुआ? लड़का- बस, फिर मोबाइल में तीन पत्ती हैंग हो गया और सारी कमाई चली गई।

पप्पू की वाईफ रोमांटिक मूड मे थी, पूरे बैड पर बांहे फैला कर लेट गयी, और पप्पू से बोली कुछ समझे? पप्पू- समझ गया आज तू पूरे बैड पर सोना चाहती है न डायन।

बच्चे के पेपर मे 0 आया। गुस्से से पिता- यह क्या है? बच्चा- पिताजी, शिक्षक के पास स्टार खत्म हो हो गए थे, इसलिये उसने मून दे दिया।

कहानी — मदद

एक दिन मैं शहर जाने के लिए रेलवे स्टेशन पहुंचा, लेकिन ट्रेन निकल चुकी थी। अब दूसरी ट्रेन दोपहर की थी। मैंने सोचा कही नाश्ता कर लिया जाए। मैं होटल की ओर जा रहा था। अचानक मेरी नजर फुटपाथ पर बैठे दो बच्चों पर पड़ी। बच्चों की हालत बहुत खराब थी। वे भूखे लग रहे थे। छोटा बच्चा बड़े को खाने के बारे में कह रहा था और बड़ा उसे चुप कराने की कोशिश कर रहा था। मैं अचानक रुक गया। मैं उन्हें दस रु. देकर आगे बढ़ गया तुरंत मेरे मन में एक विचार आया कितना कंजूस हूं मैं! दस रु. का क्या मिलेगा? स्वयं पर शर्म आयी फिर वापस लौटा। मैंने बच्चों से कहा-कुछ खाओगे? जी। मैं नाश्ता करने जा रहा हूं, तुम भी कर लो! मेरे पीछे पीछे वे होटल में आ गए। उनके कपड़े गंदे होने से होटल वाले ने डांट दिया और भगाने लगा। मैंने कहा भाई साहब! उन्हें जो खाना है वो उन्हें दो, पैसे मैं दूंगा। होटल वाले ने आश्चर्य से मेरी ओर देखा..! उसकी आंखों में उसके बर्ताव के लिए शर्म साफ दिखाई दी। सेल्फ सर्विस के कारण मैंने नाश्ता बच्चों को लेकर दिया। बच्चे जब खाने लगे , उनके चेहरे की खुशी कुछ निराली ही थी। मैंने भी एक अजीब आत्म संतोष महसूस किया। मैंने बच्चों को कहा बेटा! अब जो मैंने तुम्हे पैसे दिए हैं उसमें एक रु. का शैम्पू ले कर हैण्ड पम्प के पास नहा लेना। और फिर दोपहर शाम का खाना पास के मन्दिर में चलने वाले लंगर में खा लेना। वहां आसपास के लोग बड़े सम्मान के साथ देख रहे थे। होटल वाले के शब्द आदर में परिवर्तित हो चुके थे। मैं स्टेशन की ओर निकला, थोडा मन भारी लग रहा था। रास्ते में मैंने मंदिर की ओर देखा और कहा- हे भगवान! आप कहां हो? इन बच्चों की ये हालत! ये भूख आप कैसे चुप बैठ सकते हैं ! फिर सोचा अभी तक जो उन्हें नाश्ता दे रहा था वो कौन था? क्या तुम्हें लगता है तुमने वह सब अपनी सोच से किया? मैं स्तब्ध हो गया! मेरे सारे प्रश्न समाप्त हो गए। ऐसा लगा जैसे मैंने ईश्वर से बात की हो! मुझे समझ आ चुका था हम निमित्त मात्र हैं। भगवान हमें किसी की मदद करने तब ही भेजता है , जब वह हमें उस काम के लायक समझता है। यह उसी की प्रेरणा होती है । किसी मदद को मना करना वैसा ही है जैसे भगवान के काम को मना करना।

7 अंतर खोजें

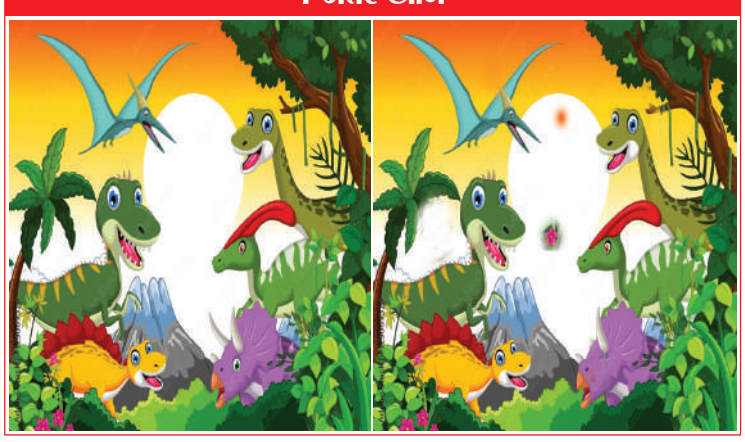

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष — पुराने किए गए प्रयासों का लाभ मिलना प्रारंभ होगा। मित्रों की सहायता कर पाएंगे। सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। कीमती वस्तुएं संभालकर रखें।

वृषभ — पारिवारिक चिंता बनी रहेगी। अनहोनी की आशंका रहेगी। शत्रुभय रहेगा। कानूनी अड़चन दूर होगी। जीवनसाथी से सहयोग प्राप्त होगा। कारोबार में वृद्धि होगी।

मिथुन — प्रतिद्वंद्विता में वृद्धि होगी। जीवनसाथी से अनबन हो सकती है। स्थायी संपत्ति खरीदने-बेचने की योजना बन सकती है। परीक्षा व साक्षात्कार आदि में सफलता प्राप्त होगी।

कर्क — पुराना रोग परेशानी का कारण बन सकता है। अज्ञात भय सताएगा। वाणी में हल्के शब्दों के प्रयोग से बचें। वैवाहिक प्रस्ताव मिल सकता है।

सिंह — पारिवारिक समस्याओं में इजाफा होगा। चिंता तथा तनाव बने रहेंगे। भागदौड़ रहेगी। दूर से बुरी खबर मिल सकती है। विवाद को बढ़ावा न दें। बनते कामों में बाधा हो सकती है।

कन्या — वाहन व मशीनरी के प्रयोग में सावधानी रखें। जरा सी लापरवाही से अधिक हानि हो सकती है। पुराना रोग बाधा का कारण बन सकता है। वाणी पर नियंत्रण रखें।

तुला — दूर से शुभ समाचार प्राप्त होंगे। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। जोखिम उठाने का साहस कर पाएंगे। सुख के साधन जुटेंगे। पराक्रम बढ़ेगा।

वृश्चिक — पूजा-पाठ में मन लगेगा। कोर्ट व कचहरी के काम बनेंगे। अध्यात्म में रुचि बढ़ेगी। व्यापार लाभदायक रहेगा। नौकरी में चैन रहेगा। निवेश शुभ रहेगा।

धनु — नई योजना बनेगी जिसका लाभ तुरंत नहीं मिलेगा। सामाजिक कार्य करने में रुचि रहेगी। प्रतिष्ठा बढ़ेगी। शारीरिक कष्ट संभव है। चिंता तथा तनाव हावी रहेंगे।

मकर — कोई बड़ी बाधा आ सकती है। राजभय रहेगा। जल्दबाजी से काम बिगड़ेंगे। बकाया वसूली के प्रयास सफल रहेंगे। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी।

कुम्भ — यात्रा में सावधानी रखें। जल्दबाजी से हानि होगी। अप्रत्याशित खर्च सामने आएंगे। चिंता तथा तनाव रहेंगे। पुराना रोग उभर सकता है। वाणी पर नियंत्रण रखें।

मीन — शारीरिक कष्ट से बाधा संभव है। प्रेम-प्रसंग में अनुकूलता रहेगी। अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

बॉलीवुड | मन की बात

फिल्म पास करने के रिश्वत मांगता है सेंसर बोर्ड : विशाल

साउथ फिल्मों के मशहूर एक्टर विशाल अपनी फिल्मों की वजह से हमेशा से ही चर्चा में रहते हैं। हालांकि, इस बार उन्होंने कुछ ऐसा कहा है कि सबके होश उड़ गए हैं। दरअसल, विशाल ने सेंट्रल बोर्ड ऑफ फिल्म सर्टिफिकेशन पर रिश्वत मांगने का गंभीर आरोप लगाया है। एक्टर ने अपना एक वीडियो सोशल मीडिया पर पोस्ट कर बताया कि वह खुद भुक्तभोगी हैं। उन्हें भी अपनी फिल्म के लिए सेंसर बोर्ड को रिश्वत खिलानी पड़ी है। विशाल में अपने वीडियो के साथ लंबा-चौड़ा पोस्ट भी लिखा है। उन्होंने इसमें बताया कि उन्हें अपनी हालिया रिलीज फिल्म मार्क एंटनी के हिंदी वर्जन को पास करवाने के लिए सेंसेर बोर्ड को 6.5 लाख रुपये देने पड़े। एक्टर ने बताया कि उनके पास मुंबई ऑफिस के लोगों ने कोई रास्ता ही नहीं छोड़ा, जिसके बाद उन्हें न चाहते हुए भी सेंसर बोर्ड को घूस खिलानी ही पड़ गई। उन्होंने अपनी इस वीडियो के साथ कैप्शन में लिखा, पर्दे पर क्रप्शन जैसा मुद्दा दिखाना ठीक है, लेकिन असल जिंदगी में ये सही नहीं है। ये हजम नहीं होता है। वो भी तब जब सरकारी अफसर हो, लेकिन CBFC मुंबई ऑफिस में ऐसा ही हो रहा है। मुझे भी मार्क एंटनी फिल्म के हिंदी वर्जन को पास कराने के लिए 6.5 लाख रुपये देने पड़े। विशाल ने बताया कि उन्होंने ये पैसा 2 ट्रांजेक्शन में भेजा। एक्टर ने कहा कि उन्होंने पहली ट्रांजेक्शन में 3 लाख रुपये और फिर दूसरी साढ़े 3 लाख रुपये सेंसर बोर्ड के अधिकारी को भेजे। विशाल ने बताया कि वह इस फिल्म पर अपना सब कुछ लगा चुके थे और ऐसे में उन्हें किसी भी हाल में हिन्दी वर्जन में रिलीज करना ही था, इसीलिए जब सेंसर बोर्ड ने उनके पास कोई चारा नहीं छोड़ा तो उन्हें आखिरकार उन्हें पैसे भेजने ही पड़े। विशाल वीडियो में कह रहे हैं, हमने फिल्म सर्टिफिकेशन के लिए सेंसर बोर्ड में अप्लाई किया था, लेकिन आखिरी मिनट पर उन्होंने फिल्म पास करने से इनकार कर दिया। मेरे मैनेजर वहीं थे। अधिकारियों ने साढ़े 6 लाख रुपये मांगे। एक महिला अधिकारी थीं वहां, उन्होंने कहा कि पैसे तो देने ही पड़ेंगे। उन्होंने कोई रास्ता नहीं छोड़ा। इसके बाद मैंने ऑनलाइन पैसे ट्रांसफर कर दिए। मैंने मैनेजर से कहा कि हम इन्हें कैश नहीं देंगे। ये हमारी मेहनत की कमाई थी, जो इस तरह रिश्वत देने में बर्बाद हो गई।

गनपत का टीजर रिलीज
योद्धा बनकर लौटे टाइगर

टाइगर श्रॉफ और कृति सेनन की फिल्म गणपत को लेकर पिछले काफी समय से चर्चा बनी हुई है। लगातार फिल्म से जुड़ी कई खबरें आ रही हैं। अब आखिरकार इसका दिलचस्प टीजर भी जारी कर दिया गया है, जिसके बाद फिल्म के लिए काफी उत्सुकता बढ़ गई है। टीजर में टाइगर और कृति के अलावा महानायक अमिताभ बच्चन की झलक भी देखने को मिल रही है। टीजर की शुरुआत लिखा दिखता है कि 2070 में दुनिया कैसी होने वाली है। इसके बाद टाइगर श्रॉफ मेडिटेशन करते नजर आते हैं। इसके बाद अगले सीन में ही दिखता है कि कुछ लोग गरीबों पर अत्याचार कर रहे हैं, उन्हें बेरहमी से पीटा जा रहा है। वहीं, जबरदस्त एक्शन भी देखने को मिलता है। दिलचस्प बात तो यह है कि इस बार सिर्फ टाइगर ही नहीं, बल्कि उनके साथ कृति सेनन भी अपने एक्शन से हैरान कर रही हैं। टीजर के बीच में अमिताभ बच्चन का वॉइस ओवर सुनाई देता है, ये लड़ाई तब तक मत लड़ना, जब तक हमारा योद्धा ना आ जाए। अगले ही पल टाइगर अपने एक्शन से सभी को चित करते नजर आते हैं। वहीं, कुछ सेकंड्स की झलक में दिखाया गया है कि फिल्म में रोमांस का तड़का भी भरपूर लगाया गया है। 1.45 मिनट के सेकंड में टाइगर को एक योद्धा के रूप में देखा जा रहा है, जो दुश्मनों से अपनों की रक्षा करते नजर आ रहे हैं।

टीजर से ही अंदाजा लगाया जा सकता है कि फिल्म में बेहतरीन वीएफएक्स का इस्तेमाल किया गया है। विकास बहल के निर्देशन में बनी गणपत का टीजर रिलीज होते ही सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है।

इस दिन होगी रिलीज

बताया जा रहा है कि गणपत एक फ्रेंचाइजी फिल्म है। इसे 20 अक्टूबर, 2023 को सिनेमाघरों में रिलीज किया जाने वाला है। मेकर्स ने अभी से इसे 3 पार्ट्स में बनाने की योजना बना ली है। इसे जैकी भगनानी, विशु भगनानी और दीपशिखा देशमुख ने मिलकर निर्मित किया है। खबरों की मानें तो हिन्दी भाषा में बन रही इस फिल्म को तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम भाषाओं में भी रिलीज किया जाएगा।

खतरों के खिलाड़ी-13 में हिना खान ने धाकड़ अंदाज में लगाए चार चांद

रोहित शेट्टी के स्टंट बेस्ड रियलिटी शो खतरों के खिलाड़ी 13 में इन दिनों कुछ अलग देखने को मिल रहा है। इस शो में वैसे तो खतरा हर मोड़ पर होता है, लेकिन अब लेवल और बढ़ गया है। शो में पिछले सीजन के धुरंधरों को बुलाया गया है, जो कंटेस्टेंट्स का खून- पसीना छुड़ाने का एक भी मौका नहीं छोड़ रहे हैं।

खतरों के खिलाड़ी 13 अब तक फैजल शेख और दिव्यांका त्रिपाठी नजर आ चुके हैं। उन्होंने अपने हैरतअंगेज कारनामों के साथ कंटेस्टेंट्स के होश उड़ा दिए। इनके बाद अब केकेके 13 में हिना खान नजर आएंगी।

हिना खान का हाल ही में शो से एक प्रोमो सामने आया था, जिसमें एक्ट्रेस अजगर के साथ हवा में गाना गाते हुए स्टंट करते हुए नजर आई थीं। खतरों के खिलाड़ी 13 में हिना खान अपने खतरनाक स्टंट और तेज-तर्रार अंदाज दोनों से आग लगा रही हैं, लेकिन इसके लिए टीवी की इस बहू ने मोटी फीस भी वसूली है।

हिना खान ने खतरों के खिलाड़ी सीजन 8 में हिस्सा लिया था। शो में उन्होंने अपने स्टंट से होस्ट रोहित शेट्टी के साथ-साथ फैंस को भी इम्प्रेस किया। यही वजह थी कि उन्हें शो में दोबारा एक चैलेंज की तरह वापसी करने का मौका मिला। रिपोर्ट्स के अनुसार, केकेके 13 के एक एपिसोड से हिना खान ने लगभग 4.5 लाख और एक हफ्ते के लिए 9 लाख के करीब वसूले हैं। इसके साथ की बतौर चैलेंजर उन्होंने इस सीजन में 10 से 15 लाख के बीच की कमाई की है।

अजब-गजब | एमपी के इस मेले में सिर्फ महिलाएं कर सकती हैं खरीददारी

इस मेले में बैन रहती है पुरूषों की एंट्री

आपने देश और दुनिया में होने वाले कई तरह के मेलों के बारे में सुना होगा और उन्हें देखा भी होगा। ये मेले अपने आप में कई खूबियां लिए होते हैं, लेकिन आज हम आपको एक ऐसे मेले के बारे में बताने जा रहे हे। जो अपने आप में इस लिए अनूठा और विचित्र है क्योंकि यह मेला केवल महिलाओं के लिए ही आयोजित होता है। इस मेले में पुरुषों की पूरी तरह से नो एंट्री होती है। आइये जानते है इस अनूठे मेले के बारे में....

दरअसल, भिंड जिले के गोरमी में बड़ी जग्गा कालिया मर्दन (श्रीकृष्ण) भगवान का मंदिर है। 182 साल पहले फूल डोल ग्यारस पर्व पर जलविहार मेले का आयोजन किया जाता है। मेले की शुरुआत मंदिर के महंत स्वर्गीय केशवदास महाराज के द्वारा की गई थी, मेले का आयोजन पांच दिन तक रखा जाता है। इस पांच दिन वाले मेले में दो दिन पुरुषों की इंट्री पर बैन रहती है। इन दो दिन में केवल महिलाएं ही खरीददारी करने आती है पुरुष की एंट्री नहीं रहती।

जलबिहार मेले के व्यवस्था रामसुजान बताते हैं कि पांच दिन के मेले में दो दिन की महिला की एंट्री रहती है, जबकि मेला 5 दिन तक भरा जाता है जिसमें दो दिन महिलाओं का होता है। तीन दिन का पुरुषों का रहती है मेले में शरारती लोग महिलाओं पर शरारत न करें इसलिए ये व्यवस्था पुराने लोगों ने रखी है। गोरमी तहसील का जलविहार मेला ग्वालियर-चंबल संभाग का एक मात्र ऐसा मेला है। जहां मेले में एक दिन पूरी व्यवस्थाएं महिलाएं ही संभालती हैं। इस दिन मेले में महिलाएं घूंघट की ओट से पूरी तरह आजाद नजर आती हैं। इस मेले के आयोजन को लेकर महिलाओं को काफी इंतजार रहता है। हालांकि कोविड की वजह से पिछले दो साल इस मेले का आयोजन नहीं हो सका था।

प्लेन पर नहीं ले जा सकते थर्मामीटर मर्करी की एक बूंद मचा सकती है तबाही

आज के समय में ज्यादातर लोग ट्रेवल करने के लिए हवाई मार्ग का चुनाव करते हैं। इसके जरिये जहां आसानी से और जल्दी इंसान अपनी मंजिल तक पहुंच जाता है, वहीं थकान भी काफी कम होती है। दूर तक के मार्ग के लिए लोग इस साधन को चुनते हैं। लेकिन प्लेन में ट्रेवल करने के लिए कई तरह के सिक्युरिटी नार्म्स को पूरा करना पड़ता है। कई बार आपको चेकिंग से गुजरना पड़ता है और कई तरह के गाइडलाइन्स का पालन करना पड़ता है। प्लेन से यात्रा करने के लिए कई तरह के नियम बनाए गए हैं। यात्रियों को एक स्पेसिफिक वजन का ही सामान कैरी करने की इजाजत होती है। इसके अलावा ऐसे कई सामान हैं, जो आप प्लेन से नहीं ले जा सकते। इनपर बैन लगाया हुआ है। अगर किसी यात्री के पास बैन की हुई सामानों की लिस्ट में शामिल कोई चीज मिलती है तो उसे चेकिंग के दौरान ही बाहर निकाल लिया जाता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि इस लिस्ट में मर्करी थर्मामीटर भी शामिल है? जी हां, जिस थर्मामीटर का इस्तेमाल बुखार नापने के लिए किया जाता है, वो प्लेन में वर्जित है। अब आप सोच रहे होंगे कि बुखार में इस्तेमाल होने वाले थर्मामीटर को भला क्यों बैन किया गया है? दरअसल, फ्लाइट में मर्करी वाले थर्मामीटर बैन है। अगर डिजिटल थर्मामीटर आपके पास है, तो उसे आप कैरी कर सकते हैं। लेकिन मर्करी वाले थर्मामीटर को तुरंत निकाल लिया जाता है। इसके पीछे एक बड़ी वजह है। प्लेन में अगर किसी यात्री के पास मर्करी थर्मामीटर हो और वो टूट जाए तो अंदर तबाही आ जाएगी। दरअसल, मर्करी की एक बूंद भी प्लेन को दुर्घटनाग्रस्त करने के लिए काफी है। मर्करी का नेचर ऐसा होता है कि वो रुम टेम्परेचर पर लिक्विड रहने वाला इकलौता मेटल है। साथ ही ये अपने साथ आए किसी भी मेटल को पिघला देता है। अगर मर्करी की एक बूंद प्लेन में गिर जाए, तो एल्युमुनियम से बना प्लेन उससे रियेक्ट कर जाएगा। इसके बाद प्लेन में छेद हो जाएगा और फिर होगा एक्सीडेंट। इस वजह से ही किसी को प्लेन में मर्करी थर्मामीटर लाने की इजाजत नहीं होती।

अडानी एनर्जी सॉल्युशंस लिमिटेड ने शुरू किया केवीटीएल प्रोजेक्ट

खारघर विख्रोली ट्रांसमिशन लिमिटेड से मुंबई को मिलेगी अतिरिक्त बिजली

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। मुंबई और वहां के लोगों के लिए एक अच्छी खबर है। क्योंकि अडानी पोर्टफोलियो की एनर्जी सोल्यूशन, ट्रांसमिशन और डिट्रिब्यूशन शाखा, अडानी एनर्जी सॉल्यूशंस लिमिटेड जिसे पहले अडानी ट्रांसमिशन लिमिटेड के नाम से जाना जाता था, उसने खारघर विख्रोली ट्रांसमिशन लिमिटेड (केवीटीएल) को चालू कर दिया है। केवीटीएल मुंबई में अतिरिक्त बिजली लाने में सक्षम होने के साथ-साथ शहर की तेजी से बढ़ती भविष्य की मांग को पूरा करने में भी सक्षम होगी। अडानी एनर्जी सॉल्यूशंस लिमिटेड द्वारा बनाया गया यह प्रोजेक्ट मुंबई के लिए इसलिए भी बेहद महत्वपूर्ण है, क्योंकि ट्रांसमिशन कॉरिडोर की मौजूदा क्षमता शहर की बिजली को बहुत आगे तक ले जाने के लिए पर्याप्त नहीं है।

ऐसे में खारघर विख्रोली लाइन इस तरह की समस्या के निवारण में काफी मदद करेगी। क्योंकि खारघर-विख्रोली लाइन भविष्य में ऐसी किसी परिस्थिति को कम करने के समाधान के रूप में मुंबई शहर में अतिरिक्त 1,000 मेगावाट शुद्ध बिजली पहुंचाना सुनिश्चित करेगी। इतना ही नहीं इस प्रोजेक्ट के चालू होने के साथ ही मुंबई को अपने नगरपालिका क्षेत्र के अंदर 400 केवी ग्रिड मिलने लगेगा। जिससे इसकी बिजली ग्रिड को अधिक इम्पोर्ट क्षमता भी मिलती है और विश्वसनीयता और स्थिरता में सुधार होता है। यह सीधे तौर पर उपभोक्ताओं के लिए बुलेट ट्रेन, मेट्रो और रेलवे के साथ-साथ कमर्शियल और आवासीय प्रतिष्ठानों के माध्यम से यात्रा करने के लिए अधिक स्थिरता प्रदान करेगा।

मुंबई में अपनी तरह का पहला 400 केवी गैस इंसुलेटेड सबस्टेशन

केवीटीएल में 400 केवी और 220 केवी ट्रांसमिशन लाइनों के लगभग 74 सर्किट किमी शामिल हैं। साथ ही विख्रोली में 1,500 एमवीए 400 केवी गैस इंसुलेटेड सबस्टेशन (जीआईएस) हैं, जो मुंबई में अपनी तरह का पहला 400 केवी सबस्टेशन है। लगभग 9,500 वर्गमीटर क्षेत्र में स्थित, 400 केवी सबस्टेशनों के मामले में इसका डिजाइन सबसे कॉम्पैक्ट है। इसका अनोखा डिजाइन 400 केवी और 220 केवी जीआईएस कोवर्टिकली स्टैक करता है, जिससे जगह की जरुरत कम पड़ती है। एईएसएल ने लाइन बिछाने के दौरान खासकर मुश्किल इलाकों को कवर करने की प्रक्रिया में कई चुनौतियों का सामना किया, लेकिन टेक्नोलॉजी और इनोवेशन के उपयोग से इसने काबू पाने में मदद की है। उदाहरण के लिए, फ्लोटिंग बार्ज पर वजनदार रिंग्स का उपयोग करके, खाड़ियों में छह टावरों का निर्माण किया गया है। शहरी क्षेत्रों में, स्पेशल हॉरिजॉन्टल टावर्स की स्थापना के जरिए कुछ स्थानों पर ऊंचाई से जुड़ी बाधाओं को भी दूर किया गया है।

नवी मुंबई से लेकर मुंबई शहर के विक्रोली तक फैला है केवीटीएल प्रोजेक्ट

केवीटीएल प्रोजेक्ट नवी मुंबई के खार घर क्षेत्र में शुरू होती है, फिर शहरी स्थानों से होकर गुजरती है और मुंबई शहर के विक्रोली में समाप्त होती है। प्रोजेक्ट में मुख्य रूप से जो विशेषताएं या बिंदु हैं, उनमें 1500 एमवीए ट्रांसपोर्टेशन क्षमता वाला 400 केवी/220 केवीजी आईएस विख्रोली सबस्टेशन, खार घर में एयरइंसुलेटेड सिस्टम स्विच-यार्ड, 400 केवीडबल/मल्टी-सर्किट खार घर-विख्रोली लाइन, विख्रोली में तालेगांव-कलवा लाइन पर 400 केवी लूपइन लूपआउट (एलआईएलओ) और विख्रोली में ट्रॉम्बे-साल्सेटलाइन पर 220 केवीएल आईएलओ शामिल हैं।

उमा भारती के बयान से बढ़ी भाजपा की टेंशन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

भोपाल। भारतीय जनता पार्टी की फायर ब्रांड नेता व मध्य प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती ने अपने एक बयान से बीजेपी की टेंशन बढ़ा दी है। पिछले दिनों पूर्व सीएम उमा भारती ने प्रदेश की राजनीति में ओबीसी आरक्षण का मुद्दा उछाल दिया था। इसके साथ ही प्रदेश की राजनीति में लगातार चर्चा चल रही है कि उमा भारती चुनाव लड़ सकती है। ऐसे में उमा भारती ने इस मामले में अपनी चुप्पी तोड़ी और सोशल मीडिया पर ट्वीट कर कहा कि, लगातार यह खबरें सामने आ रही हैं कि मैं मध्य प्रदेश में विधानसभा चुनाव लड़ूंगी, जबकि यह सच नहीं है।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर उमा भारती ने इस मामले में छह ट्वीट किए हैं। अपने पहले ट्वीट में उमा भारती ने कहा कि, हमारी पार्टी ने मध्य प्रदेश में कुछ केंद्रीय मंत्रियों एवं सांसदों को विधानसभा चुनाव में उतारा है, इस निर्णय का अभिनंदन। यह सभी नाम अपने-अपने क्षेत्र में ऐसी लहरें पैदा करेंगे जिससे पूरा प्रदेश विधानसभा चुनाव में लाभान्वित होगा।% दूसरे ट्वीट में उमा भारती ने कहा कि, मध्य प्रदेश का बहुत ही प्रतिष्ठित समाचार पत्र सद्भावना से ही यह लिखता है कि, मैं मध्य प्रदेश में विधानसभा चुनाव लड़ूंगी। इससे मुझे बहुत दिक्कत एवं शर्मिंदगी का सामना करना पड़ता है क्योंकि यह सच नहीं है।

ऑनलाइन कारोबार पर रोक लगाने को डिप्टी सीएम से मिले व्यापारी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। पूरे देश के साथ ही उत्तर प्रदेश में ऑनलाइन ट्रेड से कपड़ा, इलेक्ट्रॉनिक सहित ज्यादातर ट्रेड का कारोबार प्रभावित हो रहा है। सोमवार को उत्तर प्रदेश के व्यापारी संगठन के मुख्य पदाधिकारी उत्तर प्रदेश सरकार के उप मुख्यमंत्री बृजेश पाठक से मिले।

कपड़ा उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल अध्यक्ष अशोक मोतियानी और महामंत्री अनिल बजाज ने उनके आवास पर मुलाकात कर उन्हें छोटे व्यापारियों की पीड़ा सुनाई। व्यापारी नेताओं ने कहा की केंद्र कि सरकार को ऑनलाइन कारोबार पर 20 प्रतिशत का सर्विस टैक्स लगाना चाहिए। संगठन के नेताओ ने यह भी कहा की उत्तर प्रदेश में ऑनलाइन कारोबार से छोटा व्यापारी खत्म होता जा रहा है। खरीदार बाजारों में कम ही आ रहा है। त्योहार के मुख्य सीजन में भी बाजारों में ग्राहकों की तादाद कम ही होती है जिससे मध्यम वर्ग का व्यापारी भवष्य को लेकर चिंतित और परेशान है। केन्द्र सरकार को छोटे व्यापारियों का कारोबार बचाने के लिए कुछ कड़े कदम उठाए जाने की आवश्कता है। इस मौके पर कपड़ा उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल के अध्यक्ष अध्यक्ष अशोक मोतियानी, महामंत्री अनिल बजाज व होटल व्यवसाई श्याम कृष्ण नानी ने संयुक्त रूप से उप मुख्यमंत्री से यह भी कहा कि उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सरकार में कानून व्यवस्था बहुत ही अच्छी है। व्यापारी वर्ग अपने आप को सुरक्षित महसूस करता है।

छत्तीसगढ़ सरकार ने छात्रों को दी स्वामी आत्मानंद कोचिंग योजना की सौगात

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मेरिट के अनुसार विद्यार्थियों का होगा चयन

योजना के अनुसार, कोचिंग राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद के माध्यम से प्रदान की जाएगी। इस संबंध में लोक शिक्षण संचालनालय द्वारा सभी जिला शिक्षा अधिकारियों के माध्यम से कोचिंग सेंटर की स्थापना की तैयारी कर प्रवेश प्रारंभ कर दिया गया है। स्वामी आत्मानंद कोचिंग योजना में मेरिट क्रम अनुसार विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा। विद्यार्थी को संबंधित विकासखंड, शहर के शासकीय स्कूलों में कक्षा 12वीं का नियमित विद्यार्थी होना अनिवार्य होगा। विकासखंड मुख्यालय की स्कूलों में कक्षा 12वीं में जीव विज्ञान और गणित संकाय में अध्ययनरत विद्यार्थी ही पात्र होंगे। प्रत्येक कोचिंग सेंटर में 75 से 100 विद्यार्थियों का प्रवेश दिया जाना है। इसमें प्री-मेडिकल और प्री-इंजीनियरिंग के लिए अधिकतम 50-50 विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा।

छत्तीसगढ़। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने मंगलवार को इंजीनियरिंग और मेडिकल के प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए अपने निवास कार्यालय से 'स्वामी आत्मानंद कोचिंग' योजना का ऑनलाइन शुभारंभ किया। इस अवसर पर स्कूल शिक्षा मंत्री रविंद्र चौबे और विभाग के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे। इस योजना में ख्याति प्राप्त एलन कैरियर इंस्टिट्यूट ने सीएसआर के तहत निःशुल्क कोचिंग देने सहमति दी है। छत्तीसगढ़ के शासकीय स्कूलों में अध्यनरत 12वीं के मेधावी छात्र-छात्राओं को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करवाने के लिए छत्तीसगढ़ शासन और एलन इंस्टिट्यूट के मध्य एमओयू पर हस्ताक्षर भी किए गए हैं।

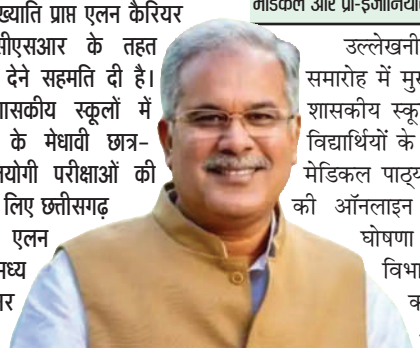

उल्लेखनीय है कि स्वतंत्रता दिवस समारोह में मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने शासकीय स्कूलों में कक्षा 12वीं के विद्यार्थियों के लिए इंजीनियरिंग और मेडिकल पाठ्यक्रम की प्रवेश परीक्षा की ऑनलाइन कोचिंग योजना की घोषणा की थी। स्कूल शिक्षा विभाग की स्वामी आत्मानंद कोचिंग योजना के अनुसार, प्रदेश के कक्षा दसवीं में 60 फीसदी अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी और कक्षा 12वीं में अध्यनरत विद्यार्थियों को कोचिंग दी जाएगी। प्रदेश के 146 विकासखंड मुख्यालयों और चार शहर रायपुर, दुर्ग, बिलासपुर और कोरबा सहित 150 कोचिंग सेंटर के माध्यम से राष्ट्रीय प्रवेश परीक्षा प्री-मेडिकल नीट के साथ प्री-इंजीनियरिंग आईआईटी की बेहतर रूप से तैयारी के लिए ऑनलाइन कोचिंग प्रदान की जाएगी।

देवरियाकांड : घायल बच्चे को 'मरहम' लगाने पहुंचे सीएम

- बीआरडी में चल रहा इलाज, मुख्यमंत्री ने पूछा हाल
- मामले में 27 नामजद व 50 अज्ञात लोगों पर दर्ज हुई एफआईआर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

देवरिया। उत्तर प्रदेश की कानून व्यवस्था की धज्जियां सोमवार को एक बार फिर उड़ीं। जब देवरिया में एक ही परिवार के पांच लोगों को घर में घुसकर मौत के घाट उतार दिया गया। इस घटना के बाद पूरे प्रदेश में सनसनी फैल गई और वहीं प्रदेश की योगी सरकार एक बार फिर विपक्ष समेत हर किसी के निशाने पर आ गई। अब इस मामले में आज सुबह सूबे के मुखिया योगी आदित्यनाथ बीआरडी मेडिकल कॉलेज में देवरिया में हुए नरसंहार में घायल बच्चे का हालचाल लेने पहुंचे। इस दौरान सीएम योगी ने बच्चे के बेहतर उपचार के अधिकारियों को निर्देश दिए।

बता दें कि देवरिया जिले में रुद्रपुर कोतवाली क्षेत्र के फतेहपुर गांव में सोमवार को सुबह छह बजे जमीन के विवाद में एक पूर्व जिला पंचायत सदस्य की धारदार हथियार से काटकर हत्या कर दी गई थी। इससे गुस्साएं पूर्व जिला पंचायत सदस्य के पक्ष के लोग दूसरे पक्ष के घर में घुसकर पति, पत्नी और उसके तीन संतानों को गोली मारकर और धारदार हथियार से प्रहार कर हत्या कर दी, जबकि एक बेटा गंभीर रूप से घायल हो गया है। रुद्रपुर कोतवाली के फतेहपुर के लेहड़ा टोला में हुई छह लोगों की हत्या की जांच के लिए सोमवार की दोपहर में प्रमुख सचिव गृह संजय प्रसाद और स्पेशल डीजी कानून व्यवस्था प्रशांत कुमार हेलीकाप्टर से पुलिस लाइन पहुंचे। जहां से वह लेहड़ा टोला के लिए रवाना हो गए। घटनास्थल पर उन्होंने निरीक्षण किया। सत्यप्रकाश दुबे के घर के अंदर भी पहुंचकर उन्होंने निरीक्षण किया। जबकि पूर्व जिला पंचायत सदस्य की हत्या के मामले की जानकारी ली। उन्होंने घटना में शामिल सभी आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई का निर्देश दिया और विवाद के भी जांच का निर्देश दिया।

सीएम पोर्टल पर हजार बार शिकायत करने पर भी नहीं हुई कार्रवाई

मामले में मृतक सत्यप्रकाश की बड़ी बेटी शोभिता द्विवेदी ने बताया कि सीएम पोर्टल पर तो न जाने कितनी बार शिकायत की। चेक किया जाए तो एक हजार बार से ज्यादा ही एप्लीकेशन पड़ी होगी। आए दिन धमकी देने की, टॉर्चर करने की. जिला प्रशासन से भी कई बार शिकायत की गई थी। इसके (प्रेमचंद्र) गैंग की। 2 अक्टूबर को उसकी एसडीएम कोर्ट में पेशी थी। लेकिन उससे पहले ही मेरे परिवार को खत्म कर दिया गया।

दोषियों का एनकाउंटर हो

शोभिता की तहरीर पर 302, 307, 504 जैसी गंभीर धाराओं में हमलावरों पर केस दर्ज किया गया है। इसमें 27 लोग नामजद हैं जबकि 50 अज्ञात हैं। पुलिस ने अभी तक 14 लोगों को हिरासत में लिया है जिनसे पूछताछ की जा रही है। शोभिता ने सीएम से मांग की है कि दोषियों ही दोषियों का एनकाउंटर हो या उनको फांसी की सजा मिले।

दिल्ली पुलिस ने भड़ास मीडिया के संपादक यशवंत सिंह के साथ की अभद्रता

» बेवजह जब्त कर लिया फोन, एफआईआर की भी नहीं दी कॉपी

» भारतीय प्रेस पत्रकार संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष अभय जोशी ने गृहमंत्री को पत्र लिखकर की कार्रवाई की मांग

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में वर्तमान समय में अधिकांश मीडिया तो सत्ता की गुलाम हो गई है। और जो कुछ एक मीडिया संस्थान व पत्रकार सरकार से सवाल करते हैं, उनको न तो सरकार पूछती है और न ही पुलिस भी उनकी बातों को सुनती है। ऐसा ही कुछ हुआ भड़ास मीडिया के संपादक व वरिष्ठ पत्रकार यशवंत सिंह के साथ। यशवंत सिंह के साथ पुलिस ने बदसलूकी की और बदतमीजी की। दरअसल, किसी काम से दिल्ली के भारत नगर थाने पहुंचे तो वहां मौजूद एसीपी संजीव कुमार और इंस्पेक्टर सूरज पाल ने उनके साथ बदतमीजी की। इस बात की जानकारी खुद यशवंत सिंह ने दी और उन्होंने दिल्ली पुलिस कमिश्नर को इस मामले में कार्यवाही करने के लिए पत्र भी लिखा।

जबरन ले लिया फोन

इस विषय में जानकारी देते हुए कमिश्नर को लिखे पत्र में यशवंत सिंह ने बताया कि जांच के लिए जब मैं भारत नगर थाने पहुंचा जहां एसीपी संजीव कुमार की मौजूदगी में इंस्पेक्टर सूरज पाल ने मुझसे पूछताछ की और मेरे जवाबों को लिखवाया।

बाद में मेरा आईफोन 11 जिसमें एयरटेल सिम है। उसे जांच के नाम पर जब्त कर लिया। लेकिन फोन जब्ती का कोई भी कागज, रसीद मुझे नहीं दिया है। मुझे आशंका है कि मेरे फोन का दुरुपयोग किया जा सकता है। मैं ये सब इसलिए आपके संज्ञान में ला रहा हूं क्योंकि पूछताछ करने वाले अधिकारी इंस्पेक्टर सूरजपाल का रवैया काफी उग्र और मारपीट की धमकियों वाला था। बिना जांच कंप्लीट हुए किसी को अपराधी मानकर ट्रीट करना बेहद शर्मनाक है। मैंने इससे पहले वाली मेल में जांच में सहयोग करने हेतु थाने पहुंचने और अभी तक एफआईआर की कापी न मिलने का जिक्र किया है। यशवंत सिंह ने ये भी बताया कि उन्हें एफआईआर की कापी नहीं दी गई। साथ ही उन्हें आशंका है कि उनका फोन छीनकर उसके जरिए उनके खिलाफ फर्जी साक्ष्य बनाए जा सकते हैं।

लोकतंत्र को तानाशाही में किया जा रहा तब्दील : यशवंत

इस मामले पर यशवंत सिंह ने बताया कि दिल्ली पुलिस द्वारा उनके साथ किए गए दुर्व्यहार पर वरिष्ठ पत्रकार उर्मिलेश ने कमेंट करके इस घटनाक्रम की निंदा की थी। जिसके बाद आज खुद उनके यहां दिल्ली पुलिस पहुंच गई और उन समेत कई पत्रकारों के यहां छापेमारी करके थाने ले गई। इन छापेमारियों पर खेद जताते हुए यशवंत सिंह ने कहा कि ये क्या हो रहा है? आपातकाल इससे कुछ अलग होता है क्या? उन्होंने कहा कि असहमति को कुचलना, रौंदना ही आपातकाल होता है। हम एक नए दौर में प्रवेश कर रहे हैं जहां लोकतंत्र को तानाशाही में तब्दील होते हुए देख रहे हैं। पत्रकारों के यहां छापे और गिरफ्तारी निंदनीय ही नहीं बल्कि हम सबको एक चेतावनी है। जो बोलेगा जो लिखेगा वो झेलेगा, वो पकड़ा जाएगा, प्रताड़ित किया जाएगा।

भारतीय प्रेस पत्रकार संघ ने की निंदा

भारतीय प्रेस पत्रकार संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष अभय जोशी ने भड़ास के संपादक वरिष्ठ पत्रकार यशवंत सिंह के साथ पुलिस के दुर्व्यवहार एवं उनका मोबाइल छीनने की घटना की कड़े शब्दों में निंदा की। जोशी ने इस घटना के विरोध एवं इस घटना में दोषी समस्त पुलिस अधिकारियों को तत्काल सस्पेंड करने की मांग की। उन्होंने देश के गृहमंत्री अमित शाह, दिल्ली के उपराज्यपाल एवं पुलिस आयुक्त को इस बाबत मेल एवं पत्र भेजकर कहा कि यशवंत सिंह देश के जाने माने प्रतिष्ठित वरिष्ठ पत्रकार हैं। दिल्ली पुलिस के इंस्पेक्टर सूरजपाल द्वारा पूछताछ के नाम पर एसीपी संजीवकुमार की मौजूदगी में यशवंत सिंह के साथ दुर्व्यवहार किया जाना बेहद अफसोसजनक है। साथ ही बिना किसी रसीद दिए उनका आईफोन छीन लेना दुर्भाग्यपूर्ण है।

सीएम योगी ने संचारी रोग नियंत्रण अभियान को दिखाई हरी झंडी

» 31 अक्टूबर तक चलेगा अभियान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

गोरखपुर। सीएम योगी आदित्यनाथ ने आज गोरखपुर जिले में संचारी रोग नियंत्रण अभियान की शुरुआत जिला अस्पताल परिसर से की। यह अभियान 31 अक्टूबर तक चलेगा। इस दौरान मच्छरों के नियंत्रण के लिए विशेष प्रबंध किए जाएंगे। संचारी रोग नियंत्रण अभियान के दौरान सफाई, फागिंग, जलभराव को खत्म करने आदि के उपायों पर जोर दिया जाता है।

संचारी रोग नियंत्रण अभियान में आईसीडीएस, शिक्षा विभाग, पंचायती राज, नगर निकाय, दिव्यांगजन सशक्तिकरण, पशुपालन और कृषि विभाग भी शामिल हैं। इसके लिए ग्राम प्रधान और नोडल अध्यापकों का प्रशिक्षण कराया गया है। ब्लॉक स्तरीय अफसरों को अभियान के दौरान की जाने वाली गतिविधियों के लिए भी प्रशिक्षित किया गया।

बुखार होने पर दी जाएगी 108 एंबुलेंस की सुविधा

सीएम योगी ने आज सुबह बीआरडी मेडिकल कॉलेज विशेष संचारी रोग नियंत्रण अभियान का शुभारंभ किया। उन्होंने विशेष संचार अभियान की रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। मौके पर भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष व एमएलसी डॉक्टर धर्मेंद्र सिंह, विधायक महेंद्र पाल सिंह, प्रदीप शुक्ला, भाजपा के जिला अध्यक्ष, महानगर अध्यक्ष व पदाधिकारी मौजूद रहे।

महाराष्ट्र के अस्पताल में मौत का तांडव जारी

» सरकारी अस्पताल में 48 घंटों में 16 बच्चों समेत 31 लोगों की मौत

» विपक्ष ने प्रदेश की शिंदे-भाजपा सरकार को बताया 'खूनी सरकार'

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। महाराष्ट्र के नांदेड़ के एक सरकारी अस्पताल में मौत का भयानक खेल चल रहा है। पिछले 36 घंटे से इस अस्पताल में मौत तांडल लगातार हो रहा है। आलम ये हो गया है कि पिछले 48 घंटों में 16 नवजात समेत कुल 31 लोगों की मौत हो गई। इससे पहले खबर आई थी कि 24 घंटे में 24 लोगों की मौत हुई है, लेकिन अब 48 घंटों में 31 मौतों की खबर ने प्रदेश समेत पूरे देश में हाहाकार मचा दिया है। क्योंकि इन मौतों ने प्रदेश की स्वास्थ्य व्यवस्था की कलई खोल कर रख दी है। यही वजह है कि अब इस मसले पर राजनीति भी शुरू हो गई है।

प्रदेश सरकार विपक्ष समेत पूरे प्रदेश की जनता के निशाने पर है। ये पूरा मामला डॉ. शंकरराव चव्हाण मेडिकल कॉलेज और अस्पताल का है।

इस मामले पर महाराष्ट्र के चिकित्सा शिक्षा मंत्री हसन मुश्रीफ का कहना है कि हम पूरी जांच करेंगे। मैंने महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और डिप्टी सीएम देवेंद्र फडणवीस को इस संबंध में जानकारी दी है। मैं अस्पताल का दौरा करूंगा और डॉक्टरों की एक समिति भी बनाई जाएगी। वहीं विपक्ष लगातार महाराष्ट्र सरकार पर हमलावर है।

सुप्रिया सुले ने पूछा- इन मौतों का जिम्मेदार कौन?

एनसीपी सांसद सुप्रिया सुले ने राज्य सरकार की आलोचना करते हुए इसे खूनी सरकार बताया। सुप्रिया सुले ने ट्वीट करके कहा कि एकनाथ शिंदे की यह ट्रिपल इंजन की खूनी सरकार है। ईडी, सीबीआई और इनकम टैक्स का इस्तेमाल कर कोविड में अच्छा काम कर रही उद्धवजी की सरकार को गिराने का काम बीजेपी ने किया है। ये जो जानें गई हैं उसके लिए राज्य सरकार जिम्मेदार है। सीएम को उस विभाग के मंत्री का इस्तीफा लेना चाहिए।

फिर उठी यूपी को बांटने की मांग, गरमाई सियासत

मंत्री संजीव बालियान ने की पश्चिमी यूपी के अलग होने की मांग, सपा सांसद ने किया समर्थन, तो संगीत सोम ने किया विरोध

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। बिहार सरकार द्वारा जातीय जनगणना के आंकड़े सार्वजनिक करने के बाद पूरे देश में जातिगत जनगणना का मुद्दा गरमाया हुआ है। लेकिन इससे इतर अब उत्तर प्रदेश में एक और मुद्दा जोर पकड़ता जा रहा है। ये मुद्दा है उत्तर प्रदेश के विभाजन का। किसी जमाने में प्रदेश की सीएम रहीं मायावती ने एक योजना बनाई थी जिसके तहत वो यूपी को चार टुकड़ों में बांटना चाहती थीं। अब एक बार फिर भाजपा की सरकार में यूपी के विभाजन की बात शुरू हुई है। वैसे ये विचार अभी सरकार का नहीं बल्कि मोदी सरकार में केंद्रीय पशुधन राज्यमंत्री डॉ संजीव बालियान का है।

दरअसल, संजीव बालियान ने एक कार्यक्रम में अलग पश्चिम उत्तर प्रदेश को बनाने की मांग रखी। अब बालियान के इस मांग के बाद ये मुद्दा जोर पकड़ता जा रहा है। हालांकि बालियान का कहना है कि यह उनकी निजी राय है कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश बने। वैसे भी यह प्रदेश की जनता की मांग है। इस बयान के बाद ये कयास लगाए जा रहे हैं कि उनका बयान पार्टी की कोई दूरगामी योजना तो नहीं है। फिलहाल बालियान के बयान के बाद अब अन्य दलों की ओर से भी इस मामले पर प्रतिक्रियाएं आने लगी हैं।

वहीं बीजेपी नेता संगीत सोम ने अलग राज्य का विरोध करते हुए कहा कि पश्चिमी यूपी अलग राज्य बना तो बन मिनी पाकिस्तान जाएगा।

राजभर ने कहा- प्रदेश बड़ा है इसे चार हिस्सों में बांटा जाए

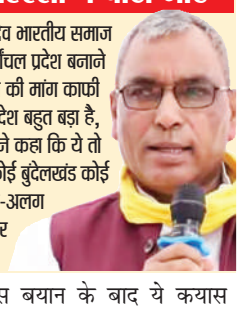

बालियान के पश्चिम यूपी के अलग बनाने की मांग के बीच सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के अध्यक्ष ओम प्रकाश राजभर ने अब पश्चिमी यूपी के बाद पूर्वांचल प्रदेश बनाने की मांग कर दी है। राजभर ने कहा कि यूपी को चार हिस्सों में बांटने की मांग काफी समय से चली आ रही है। हम भी इसका समर्थन करते हैं। ये प्रदेश बहुत बड़ा है, इसलिए इसे बांट देना चाहिए। सुभासपा प्रमुख ओम प्रकाश राजभर ने कहा कि ये तो लंबे समय से मांग चल रही है, हम लोग पूर्वांचल की मांग करते हैं। कोई बुंदेलखंड कोई हरित प्रदेश की मांग करता है। अलग-अलग सोच है, लोग अलग-अलग मांग करते हैं। प्रदेश बड़ा है, प्रदेश में बंटवारा हो, हम भी उसके पक्षधर हैं। हम भी यही मांग करते हैं कि प्रदेश को चार हिस्सों में बांटा जाए।

अलग राज्य बनने से सुधरेगी कानून-व्यवस्था: बर्क

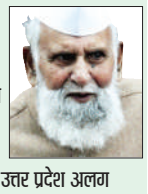

बालियान की इस मांग पर अब सपा सांसद डॉ. शफीकुर्रहमान बर्क ने पश्चिमी यूपी को अलग राज्य बनाने की मांग का समर्थन करते हुए कहा कि अगर पश्चिम उत्तर प्रदेश अलग राज्य बनेगा, तो इससे कानून व्यवस्था अच्छी होगी और राज्य का विकास भी होगा। क्योंकि उत्तर प्रदेश बहुत बड़ा राज्य है और समय-समय पर पश्चिमी उत्तर प्रदेश को अलग राज्य बनाने की मांग उठती रही है। अगर ये अलग राज्य बन जाता है तो इससे विकास को गति मिलेगी। संभल के सांसद शफीकुर्रहमान बर्क ने व्यक्तिगत तरीके से समर्थन करते हुए कहा कि यूपी बड़ा राज्य है। छोटे राज्य होने से निजाम अच्छा होगा। वहीं उन्होंने कहा कि अलग राज्य की मांग पहले से होती रही है।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित एवं 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक - संजय शर्मा, विधि सलाहकार: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, वित्तीय सलाहकार: संदीप बंसल, कार्टूनिस्ट: हसन जैदी, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in
RNI-UPHIN/2015/62233 डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।